ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना के लिए समर्पित...

वर्ष - 27 | अक्टूबर - 2025 | अंक - 10 | माउंट आबू | Rs.-16

संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भारत व नेपाल में हुआ कार्यक्रम

रक्तदान मानवता का सबसे बड़ा महान कार्य- जेपी नड्डा

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था मानवता के लिए महान कार्य कर रही है। रक्तदान अभियान मानवता का सबसे बड़ा महान कार्य है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर में समाज सेवा प्रभाग द्वारा विशाल राष्ट्रीय रक्तदान अभियान के शुभारम्भ पश्चात् दादी प्रकाशमणि सभागार में आयोजित कार्यक्रम में माननीय केन्द्रीय मंत्री जेपी नड्डा, स्वास्थ्य,परिवार कल्याण, रसायन तथा उर्वरक मंत्रालय,भारत सरकार ने व्यक्त किए। उन्होंने आगे कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था ने आन्तरिक परिवर्तन के कार्य को एक वटवृक्ष के समान विशाल रूप दिया है। ये दादीजी की समाज सेवा एवं प्रखर नेतृत्व की याद दिलाता है। संस्थान द्वारा विश्वभर में व्यक्तिगत रूप से हो रहे आंतरिक परिवर्तन से ही सामाजिक परिवर्तन संभव है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था मूल्य परक शिक्षा पर विशेष जोर देती है। मूल्य आधारित शिक्षा ही मानव मन को सुख और शान्ति से भर सकती है। मन की शान्ति ही चित्त को शान्त करती है, जिससे ही सामाजिक सामंजस्य पैदा होता है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि रक्तदान सबसे बड़ा जीवनदान है। बुझती ज्योति को प्रज्वलित करना ही परम पुण्य है। उन्होंने आगे कहा कि ये अभियान दादी प्रकाशमणि जी के 18वें पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर हो रहा है। दादी प्रकाशमणि जी का जीवन हमारे लिए आदर्श है। ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि रक्तदान के लिए शुद्ध रक्त होना भी जरूरी है। जिसके लिए व्यसनों और बुराइयों से मुक्ति आवश्यक है। कार्यक्रम में अभियान के लिए एक गीत का भी शुभारम्भ हुआ। जिसको ब्र.कु. चांद ने स्वर प्रदान किए। ग्लोबल हॉस्पिटल,माउंट आबू के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने भी अपने विचार रखे। प्रेरक वक्ता ब्र.कु. इवी गिरीश ने अभियान के उद्देश्य को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि अभियान का लक्ष्य एक लाख यूनिट रक्तदान का है। ब्र.कु. बीरेन्द्र ने सभी को रक्तदान करने के लिए प्रतिज्ञा कराई। कार्यक्रम का कुशल संचालन ब्र.कु. सरिता एवं ब्र.कु. विद्यार्थी ने किया। कार्यक्रम के दौरान लगभग 2000 लोगों की उपस्थिति रही।

परिस्थितियों में तनाव मुक्त रहने का सहज साधन राजयोग मेडिटेशन : उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी

जयपुर-श्रीनिवास नगर(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के 18 वें स्मृति दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के 'पीस पैलेस' में आयोजित रक्तदान शिविर में आयीं राजस्थान की माननीया उप-मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने दादी को पुष्पांजलि अर्पित कर सच्ची श्रद्धांजलि देने के बाद उन्होंने अपने संबोधन में रक्तदान को महादान बताते हुए कहा कि रक्तदान से किसी जरूरतमंद को जीवनदान मिल सकता है। इस पुण्य आयोजन में उपस्थित होकर मुझे मानवता के इस महान कार्य में सहभागी बनने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने आगे कहा कि यहाँ पर सिखाया जाने वाला राजयोग मेडिटेशन वर्तमान समय की परिस्थितियों में तनाव मुक्त रहने का सहज साधन है। जिसे सभी को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाना चाहिए। रक्तदान शिविर में राजस्थान का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल एस.एम.एस. ब्लड बैंक एवं संतोकबा दुर्लभ जी ब्लड बैंक द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ पीस पैलेस सेवाकेन्द्र पर 170 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। खेतान अस्पताल द्वारा निःशुल्क हृदय एवं स्वास्थ्य जांच व दृष्टि आई हॉस्पिटल द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच की गई। कार्यक्रम में अन्य संस्थाएं, संगठन व आर्मी के लेफ्टिनेंट राहुल जोशी 30 रक्तदाताओं के साथ पहुंचे। सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. हेमलता ने कार्यक्रम को सफल बनाने वाले सभी सहयोगी संस्थाओं व रक्तदाताओं को भी धन्यवाद दिया। उद्योगपति मदनलाल शर्मा ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य अतिथिगण भी उपस्थित रहे।

भारत तथा नेपाल में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रक्तदान अभियान के दौरान सभी प्रदेश वाइज़ एकत्र की गई यूनिट रिपोर्ट...

88581 यूनिट

S. No.	State Name	Total Units
01	Andhra Pradesh	4775
02	Arunachal Pradesh	18
03	Assam	478
04	Andaman and Nicobar Islands	76
05	Bihar	1232
06	Chandigarh	548
07	Chhattisgarh	3611
08	Dadra & Nagar Haveli	28
09	Daman & Diu	90
10	Delhi	3437
11	Gujarat	8756
12	Haryana	6636
13	Himachal Pradesh	902
14	Jharkhand	825
15	Jammu & Kashmir	84
16	Karnataka	5510
17	Kerala	885
18	Madhya Pradesh	4613
19	Maharashtra	12044
20	Nagaland	35
21	Odisha	1777
22	Punjab	1008
23	Rajasthan	7430
24	Sikkim	496
25	Tamil Nadu	734
26	Telangana	3012
27	Tripura	210
28	Uttar Pradesh	4296
29	Uttarakhand	942
30	West Bengal	1775
1	Nepal	15395
	Total	88581

रक्त की एक-एक बूंद जीवनदायिनी

वाराणसी-सारनाथ(उ.प्र.)। संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम सभी अतिथियों के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ हुआ। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में आयुष मंत्री दयाशंकर मिश्र ने कहा कि रक्त की एक-एक बूंद अमृत तुल्य जीवनदायिनी है। संस्थान अपने व्यापक अभियान के तहत एक लाख से अधिक यूनिट संकलन कर नया कीर्तिमान रचने जा रही है, जो गौरव की बात है। मुझे बहुत खुशी है कि इस पवित्र और दिव्य स्थान में आकर मैं इस अभियान में शामिल हो पाया। राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि हर एक को आपस में मिलकर आगे बढ़ने की ज़रूरत पर बल दिया। शिविर आयोजन कमेटी के सचिव होली हॉस्पिटल पहाड़िया के प्रबंधक डॉ. के.पी. जायसवाल ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर की सार्थकता और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए सहयोगी कबीर चौरा हॉस्पिटल और टाटा कैंसर हॉस्पिटल के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रबंधक ब्र.कु. दीपेन्द्र, ब्र.कु. राधिका, ब्र.कु. तापोशी, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. शिवपूजन, पूर्व सी.एम.ओ. डॉ. वी.वी. सिंह, हरहुआ के ब्लॉक प्रमुख विनोद कुमार उपाध्याय, स्थानीय समाजसेवी अनुज पाण्डेय, कैंसर हॉस्पिटल के प्रो. रेवती नैयर, कबीर चौरा हॉस्पिटल के डॉ. संजीव कुमार सिंह, आयकर अधिकारी राकेश श्रीवास्तव, आर.एस.एस. कुटुम्ब प्रबोधन काशी उत्तर भाग के संयोजक रमेश सिंह आदि की उपस्थिति रही। संस्था की ओर से अतिथियों को सम्मान स्वरूप प्रमाण पत्र प्रदान किया।

दिया का दीपोत्सव - पेज 3 पर

- पेज 11 पर

हे मेरे बच्चों मन दिमाग का संतुलन करो

रिगार्ड और रिस्पेक्ट के बीच अंतर समझने से व्यवहार अच्छा होगा - पेज 5 पर

दीपावली पर आंतरिक सफाई और नये साल की योजना

[illegible]

दीपावली का पर्व केवल घरों को रोशनी और सजावट से भरने का अवसर नहीं है बल्कि यह भीतर की धूल हटाकर आत्मा को उज्जवल करने की प्रेरणा भी देता है। परमात्मा द्वारा दी जाने वाली शिक्षा के अनुसार असली सफाई केवल बाहर की दीवारों या वस्त्रों तक सीमित नहीं होती, बल्कि विचारों, संस्कारों और सम्बन्धों की धूल हटाना ही सच्चा शुद्धिकरण है।

जब हम दीपावली के अवसर पर झाड़ू-पोंछा करके घर को चमकाते हैं, तो यह हमें याद दिलाता है कि मन की गहराई में जमी हुई नकारात्मकता, आलस्य, ईर्ष्या, नफरत, घृणा और क्रोध की परतों को भी हटाना जरूरी है। जिस प्रकार अन्धेरे कमरे में दीपक जलाते ही प्रकाश फैल जाता है, उसी प्रकार आत्मा रूपी दीपक में परमात्मा की स्मृति का तेल भरकर हम भीतर की अन्धकारमय प्रवृत्तियों को दूर कर सकते हैं। यह आन्तरिक दीपावली ही वास्तविक उत्सव है।

नये वर्ष का आरम्भ दीपावली के साथ ही होता है। यह हमें संकेत देता है कि केवल कैलेंडर बदलने से जीवन नहीं बदलता, बल्कि हमें संकल्प बदलने की आवश्यकता है। यदि हम नये वर्ष में शुद्ध विचारों, सकारात्मक दृष्टिकोण और श्रेष्ठ कर्म करने का संकल्प लें तो जीवन स्वतः ही नए रंगों से भर उठेगा।

परमात्मा हमें सिखाते हैं कि संकल्प ही सृष्टि का बीज है। जैसा बीज होगा वैसा ही वातावरण और परिणाम मिलेगा।

अक्सर लोग नए साल पर बड़े-बड़े लक्ष्य बनाते हैं, परंतु उसका आधार कमजोर होता है। सच्ची योजना यह है कि पहले आत्मा को शक्तिशाली बनाया जाए, नियमित राजयोग मेडिटेशन, सात्विक आहार और अच्छे संस्कारों का अभ्यास आत्मा को बल देता है। जब आत्मा मजबूत होती है तो निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है और लक्ष्य पाने की शक्ति भी सहज ही मिल जाती है।

इस दीपावली पर हम यह प्रण लें कि केवल बाहर के दीप जलाने तक ही सीमित न रहें, बल्कि अपने अंतर्मन में भी दिव्यता का दीप प्रज्वलित करें। क्रोध के स्थान पर शान्ति, ईर्ष्या के स्थान पर सहयोग, चिन्ता के स्थान पर ईश्वर पर विश्वास और घृणा-नफरत के स्थान पर आत्मिक स्नेह को स्थान दें, शक व अनुमान की दृष्टि को बदल स्पष्टता और स्वच्छता रखें, अंदर-बाहर सच्चाई व सफाई का व्यवहार रखें, सर्व के प्रति शुभभावना-शुभकामना देने का दृष्टिकोण बनाएं। यही आन्तरिक सफाई है।

नये वर्ष की योजना केवल आर्थिक और व्यावसायिक लाभ तक ही न रहे, बल्कि आत्मिक उन्नति, स्वस्थ जीवनशैली और परिवार में मधुर संबंध स्थापित करने पर भी ध्यान केन्द्रित हो। जीवन का वास्तविक लाभ तभी है जब हम स्वयं भी शान्त और सुखी रहें तथा दूसरों को भी सुख और शान्ति का अनुभव कराएं।

अंततः दीपावली हमें यह याद दिलाने आती है कि अंधकार चाहे कितना भी गहरा हो, एक छोटा-सा दीपक उसे मिटाने के लिए पर्याप्त है। उसी प्रकार, नकारात्मकता चाहे कितनी भी हो, यदि आत्मा परमात्मा से जुड़कर एक संकल्प ले ले, तो नया साल वाकई नया बन सकता है। यही परमात्मा का संदेश है कि आत्मिक दीपावली मनाओ और नये युग की ओर कदम बढ़ाओ।

मनमनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो तो सफलता मिल जाएगी

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा कहते हैं बच्चे अभी समय बहुत नाजुक आने वाला है इसलिए अपने मन पर कन्ट्रोल जरूर होना चाहिए। सेकण्ड में मैं अपने मन को ऑर्डर करूं कि व्यर्थ खत्म हो जाए, समर्थ चले। तो एक सेकण्ड में हम अपने मन पर ऑर्डर कर सकें और उसी ऑर्डर के अनुसार एक सेकण्ड में हम व्यर्थ को फुलस्टॉप लगा सकें, इसकी प्रैक्टिस काम करते हुए भी होनी चाहिए। हमारा पेपर अचानक होना है और अचानक किस समय कैसे भी हो सकता है इसलिए हमारे मन पर हमारा कन्ट्रोल हो तो सेकण्ड में पास हो जाएंगे। अगर कन्ट्रोल नहीं है तो प्रयत्न करेंगे पास होने का लेकिन प्रयत्न में टाइम लग सकता है।

हमारा मूल मन्त्र है मन-मनाभव, मन अपने ऑर्डर में रहे और जहाँ लगाने चाहें वहाँ ही लगे, जितना समय लगाना चाहें वो ऑर्डर में रहे। ये है मन-मनाभव। बाबा कहते बच्चे इस मन-मनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो तो सफलता मिल जाएगी। तो इस मंत्र को यंत्र मुआफिक सेकण्ड में मैं यूज़ कर सकूं ये प्रैक्टिस बहुत-बहुत जरूरी है। बाबा ने कहा था कई बच्चे कहते हैं कि वैसे तो ठीक हैं लेकिन जब कर्मयोगी बनते हैं तो डबल काम हो जाता है, उस समय हमारी प्रैक्टिस थोड़ी और होनी चाहिए। इसके लिए कर्मयोगी बनते समय सोचो कि मैं आत्मा करावनहार हूँ और यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं। तो जब अपनी सीट पर सेट होंगे, तो सीट पर बैठे हुए मालिक का सब ऑर्डर मानते हैं। अगर आपकी कर्मेन्द्रियां आपका कहना नहीं मानती हैं तो इससे सिद्ध है कि आप अपनी सीट पर सेट नहीं हैं। आपकी सीट है मैं मालिक हूँ, अधिकारी हूँ, मालिक को तो पॉवर होती है ना, ऑलमाइटी अथॉरिटी हूँ। ऑलमाइटी अथॉरिटी का बालक हूँ, इस सीट पर सेट होके फिर कर्मयोग के टाइम ट्रायल करो तो सहज हो जाएगा।

तो इस पर हमारा अटेन्शन होना चाहिए क्योंकि अचानक पेपर होना है तो कर्मयोग के टाइम भी हो सकता है। इसलिए बाबा अभी इसी प्वाइन्ट पर विशेष अटेन्शन खिंचवा रहा है। मेहनत तो हमको करनी पड़ेगी ना, सीट पर सेट हमको होना पड़ेगा इसलिए बाबा हमको कहता है बहुत समय का अभ्यास नहीं होगा तो उस समय हम उसको कन्ट्रोल कर नहीं सकेंगे।

जब आत्म-अभिमानी शब्द कहते हैं तो आत्मा के अभिमान कौन से हैं? बाबा जो हमें समय प्रति समय स्वमान बताते हैं, जैसे बाबा कहते हैं तुम विश्व परिवर्तक हो, हम आत्मा हैं लेकिन आत्मा के साथ-साथ हम ये स्वमान याद रखें, आत्मा तो लाइट है, लाइट रूप होकर हम चलते हैं लेकिन साथ में अगर स्वमान भी याद रहे तो देह अभिमान खत्म हो जाएगा। जैसे बाबा कहते हैं आप परमात्म दिलतख्त के मालिक हो, यह कितनी बड़ी बात है, अगर हम सोचें कि मैं आत्मा हूँ, आत्मा के साथ मैं कौन-सी आत्मा हूँ! तो हमारी आत्मा का अभिमान ये है कि जो बाबा स्वमान देते हैं उस स्वमान में स्थित रहें और स्वमान में स्थित रहने से बहुत रमणीक हो जाता है। जैसे मैं विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ, ये कितने मर्तबे की बात है। उस स्थिति में अगर हम स्थित रहें तो सारा दिन हम अलर्ट रहेंगे।

ऐसी स्थिति हो जो निंदा-स्तुति, मान-अपमान में समान रहें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा की मुरली सुनने के बाद हमारा दिल कहता था कि बाबा से चिटचैट करें, बाबा भी कहता है मुरली के बाद आपस में मुरली रिवाइज करो क्योंकि तुरन्त रिवाइज करते हैं तो दिनभर याद रहती है। यह मुरली के बाद बाबा के पास बैठने से पता चलता था कि बाबा मुरली सुनाके कैसे न्यारा हो जाता है। पूछने पर कहता था कि कल्प पहले सुनाया था, फिर कल्प के बाद सुनाऊंगा। बच्चो, गोल्डन चांसेस नेवर रिपीट। अपने को कितना अच्छा शिक्षक मिला है, कितनी मीठी-मीठी बातें सुनाता है। अन्दाजा लगा के देखो, इतना प्यारा बाबा सारे कल्प में फिर नहीं मिलेगा।

रूखेपन का संस्कार भी बहुत खतरनाक है। रूखे रहेंगे, समझेंगे काम में बहुत बिजी हूँ या फिर अभिमान बिजी कर देता है। रूखेपन में कितना नुकसान है। तो रूखी रोटी खाके सूखा हो गया वो औरों को क्या सुखी करेगा! किसी भी गुण की वैल्यू बहुत है। बाबा ने ऐसा खज़ाना दिया है, जो आत्माएं बाबा के घर आकर माला-माल हो जाएं।

चार बातें हमारे अन्दर स्पष्ट है, जो बाबा कहते थे बच्चे ज्ञान ऐसा है जैसे अन्धे के आगे आइना। हो अन्धा, आइने के सामने आये तो दिखेगा कैसे! पर यह आइना ऐसा है जो अन्धा भी देख सकता है। ऐसा पॉवरफुल आइना हो जो दूसरों को कुछ कहे नहीं, अपने आप अपने को देखने लग पड़े, न सिर्फ देखने लगे, बनने लग पड़े। चार बातें हैं, भावी के साथ भाग्य, भगवान और समय। चारों का मेल है। भगवान ने बताया अभी तेरी यह भावी बनी पड़ी है। बाबा कितना अच्छा है सोचो तो सही। फिर बाबा कहेगा तू कितनी अच्छी हो। बाबा आप कितने सुन्दर हो, सुन्दर इतना है जो हमें काले से सुन्दर बना देता है। सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। हम तो झूठे बन गए थे, बॉडी कॉन्शियस बन गए थे। आत्म-अभिमानी बनाकर ऐसा पकड़ा है जो पुराने स्वभाव-संस्कार से छूट गए।

तो भावी बनी पड़ी है, पर बनानी भी है, यह समझ दी है। ऐसे नहीं जो बना हुआ होगा। अभी यह टाइम है बनाने का। तो चारों में से महिमा किसकी ज्यादा करें? जिसने ज्यादा भक्ति की है वो पहले बाबा से मिलता है। फट से मिलता है। कर्म तो हमें गर्भ तक भी नहीं छोड़ते हैं। यहाँ से भल शरीर छोड़ा, पर गर्भ के बाहर भी निकलेगा तो उसी कर्म के अनुसार निकलेगा। बाबा ने समझाया है कि अभी कर्म का हिसाब-किताब खत्म करो, नहीं तो गर्भ तक भी हिसाब-किताब नहीं छोड़ेगा। सदाकाल का सुख, अविनाशी सुख जो बाबा दे रहा है वो सुख अपने आप सफलता पाने के लिए है। किसी के साथ द्वेष भाव रहने में कोई सफलता नहीं है। ऐसे नहीं कि जो हमारी प्रशंसा करे वो हमारा मित्र है और निन्दा करे वो शत्रु है, नहीं। निन्दा-स्तुति, हार-जीत में समान बनें, तब कहेंगे ज्ञान अन्दर गया है। ज्ञान है नॉलेज, योग है याद। ऐसी याद जिससे मान-अपमान, निंदा-स्तुति में समान रहें। जिसका नाम लो उसके अनुसार नैन, चैन हो जाएं वह कोई ज्ञान नहीं है।

हमारी ज़ीरो स्थिति ही हमें हीरो बनाती है

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

हम बच्चे इतने पद्मापद्म भाग्यशाली हैं, जो हमारे कदम-कदम में पद्म हैं। स्वयं भगवान हमारे भाग्य का गायन करता है। तो सोचो हम कितने भाग्यवान हैं। अपने आपके भाग्य को स्वयं ही सराहना करो। अगर स्वयं अपना भाग्य देख हर्षित रहेंगे तो कभी गम नहीं आएगा। यह भी सोचो कि हमें भाग्यवान क्यों कहा? क्योंकि हम सभी हीरो-हीरोइन हैं। जो ड्रामा में हीरो-हीरोइन पार्टधारी होते हैं, उनके ऊपर ड्रामा के डायरेक्टर का विशेष अटेन्शन होता है। उनकी वैल्यू को भी जानते हैं, क्योंकि सारे फिल्म की आकर्षण हीरो-हीरोइन पार्टधारी पर होती है। उन्हें सब बातों की एक्टिंग करनी आती है। राजा का भी पार्ट एक्यूरेट बजाएगा तो दास-दासी का भी पार्ट एक्यूरेट बजा लेगा। वह एक्टिव और ऑलराउण्ड होता।

हीरो पार्टधारी माना हर बात का अनुभवी, जानकार। तो हम-आप सभी सारे कल्प के अंदर हीरो-हीरोइन हैं। संगम पर बाबा हमें इतना महान बनाता है, एक्टिव बनाता है जो सारे कल्प में हम महान रहते हैं। अभी हम सर्व सम्बन्ध एक बाप से जोड़ते, बाप की सारी नॉलेज को स्वयं में धारण करते, बाप के समान बनते हैं, यह भी हम सभी का पार्ट है। जैसे बाप स्वयं ज़ीरो है, ऐसे हमें भी ज़ीरो बनाकर हीरो बनाता है। जैसे बाप वैसे हम बन जाते हैं। बाप समान निराकारी बनने का, फिर निराकार बाप को प्रत्यक्ष करने का भी हमारा पार्ट है। सर्विस करके बाप को प्रत्यक्ष करने का भी पार्ट है। स्वर्ग की नई राजधानी स्थापन करके सूर्यवंशी घराने की प्राइज़ लेने का भी पार्ट है। महाराजा-महारानी व रॉयल फैमिली की विजयी माला बनने का भी पार्ट है। फिर द्वापर से लेकर आपेही पूज्य, आपेही पुजारी बनने का पार्ट है। फिर अन्त में सारी नॉलेज को धारण करके मास्टर नॉलेजफुल बनने का भी हमारा पार्ट है। ऐसे हैं हम हीरो पार्टधारी।

इस ड्रामा में आदि से अन्त तक हम हीरो हैं। संगम पर हमें बाबा लाइट का ताज देता, शक्तियों की माइट का भी ताज देता। हम आधाकल्प डबल ताजधारी रहते हैं। इस समय हम गरीब निवाज़ बाबा के बच्चे हैं। लेकिन हम हैं डबल ताजधारी। दुनिया वाले चिंताओं में रहते, और हम ज्ञान रत्नों से भरपूर होकर खुशियों के गीत गाते। तो क्या आप सब अपने को ऐसा हीरो समझते हो? वैसे भी हीरे का दाम बहुत होता है। हीरो बनना है तो अपनी स्थिति ज़ीरो बनाओ। तो एक तो हम सच्चे हीरे अर्थात् डायमण्ड हैं, दूसरा हम हीरो पार्टधारी हैं। जिस घड़ी जो पार्ट है- उसे एक्यूरेट बजाओ। आकर्षण वाला बजाओ। लेकिन पार्ट बजाते भी साक्षी रहो। साक्षी दृष्टा होकर पार्ट बजाने का बैलेन्स रखो। सारी नॉलेज को ऐसा ग्रहण कर लो जैसे कहते हैं चिड़ियों ने सागर को हप किया। जो सारी नॉलेज को हप कर नॉलेजफुल बनता उसे किसी भी बात में शंका नहीं होती। ज्ञान सागर बाबा हमें रोज़ नई प्वाइंट्स सुनाकर खज़ाने से भरपूर करता है।

हम सबका प्यार नॉलेज से, पढ़ाई से हो। जिसका पढ़ाई से प्यार है, उसका विचार सागर मंथन भी चलता है। उसे नशा रहता है कि हम कितने बड़े जौहरी हैं। बड़े से बड़े हीरे भी हमारे पास हैं तो छोटे से छोटे हीरे भी हमारे पास हैं। कोई भी हमारे पास आये तो हम उसे ज्ञान रत्नों की ज्वैलरी पहना सकते हैं। जिसके पास सच्चे हीरों की ज्वैलरी होगी उसकी झूठे हीरों पर नज़र नहीं जा सकती। इसलिए बाबा कहते दुनिया की झूठी जवाहरात को, अथवा बातों को देखते भी नहीं देखो, सुनते भी नहीं सुनो। क्योंकि हमें सच्चे जवाहरात मिल गए। बाबा ने हमें जवाहरात से सजाया है। ज्ञान रत्नों की ज्वैलरी से हमें खूब सजाया है। हमें सर्वशक्तिवान् बाबा ने सर्वशक्तियां दी हैं। सबसे बड़ी शक्ति हमें बाबा ने प्रेम की दी है। एक बाप के सब बच्चे हैं इसी एक दृष्टा ने हमें प्रेम की मूर्त बनाया है। दुश्मन को भी दोस्त बना दिया है।

ब्राह्मण अर्थात् बी.के. कभी यह नहीं कह सकते कि यह मेरा दुश्मन है। दुनिया की भाषा में है कि यह विपक्ष का है, हमारी भाषा में न पक्षपात है, न दुश्मनी है। दुनिया विनाश के साधन बनाने वालों को दुश्मन समझती लेकिन कल्याणकारी बाबा कहते कि ड्रामा के अन्दर जो कुछ बना है यह सब कल्याणकारी है। भल लोग बाबा की ग्लानी करते, बाबा समझानी देगा लेकिन फिर कहेगा यह भी ड्रामा। तो हमारी दृष्टि सबके लिए कितनी प्रेम भरी, रहम भरी चाहिए।

दिया का दीपोत्सव

"जिन्होंने निराशाओं को उमंग-उत्साह दिया, भटके हुए को राह दिखाई, कमजोरों को सहारा दिया, भूले हुए को ज्ञान दिया, हारे हुए को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया ऐसे जीवन भर में हरेक को दिया है, अंधकार के फैले हुए को प्रकाश दिया ऐसे देते-देते- वे देवतुल्य बन गए, विकारों पर विजय प्राप्त कर ली उनका दीपोत्सव।"

दीपावली जगमगाते हुए दीपों की रोशनी का त्योहार है तो आइए इस बार एक नई सोच के साथ एक नई तरह से दीपावली मनाएं। इस पर्व के हर एक रीति-रिवाज़ के पीछे के आध्यात्मिक रहस्य को गहराई से जानें तथा अपने जीवन को एक नई सोच और एक नई दिशा दें।

इस नए साल पर नए युग के आगमन का शुभारम्भ करें। अपने यथार्थ अस्तित्व को जानकर परमपिता परमात्मा से जुड़कर अपना आत्मा रूपी दीया जलाएं। और हर एक को स्नेह भरी शुभकामनाओं और शुभभावनाओं रूपी अमूल्य गिफ्ट दें। इस दीपावली स्वस्तिक बनाते हुए उसकी चारों भुजाओं के द्वारा इस धरा के चारों युगों को जानें। साथ ही दीपावली के स्वादिष्ट 'दिलखुश मिठाई' का स्वाद स्वयं भी चखें और औरों को भी बांटें। भाईदूज के तिलक के महत्व को जानकर सदा ही अपनी आत्मिक स्मृति का तिलक हर दिन अपने मस्तक पर सजाएं।

इसके साथ ही दीपावली पर हर साल नई चीज़ों की खरीदारी करते आये हैं। इस बार उन चीज़ों के साथ नए संस्कार भी अपने जीवन में धारण कर नवीनता लाएं जिससे आपके मन में और जीवन में खुशहाली छा जाए। और अतः यह सब अपने जीवन में धारण करने से अपने जीवन के सभी खट्टे-खट्टे को सही तरीके से सेटल कर पाएंगे।

दीया के महत्व को जानें

दीपावली माना 'दीपों का त्योहार'। जिसे दीपमाला भी कहते हैं, जिसका अर्थ है 'एक दीये से दूसरे दीये को जलाना माना ज्योति से ज्योति जगाना'। हम सभी ने अपने-अपने घर में यह सुना होगा, देखा होगा कि घरों में जलने वाले दीये की लौ कभी भी बुझ न पाए वर्ना अशुभ होगा, वह हमेशा जलती रहे, प्रज्वलित रहे। तो जीवन में सबकुछ शुभ ही शुभ होगा। लेकिन क्या कभी हमने इसमें छीपे रियल अर्थ को जानने और समझने की कोशिश की है कि कैसे एक दीये की लौ से जीवन में शुभ या अशुभ हो सकता है।

दीपावली पर्व के सन्देश द्वारा दीये/दीपक के रियल स्वरूप को समझते हैं...

दीया/दीपक- मिट्टी का दीया माना मिट्टी का शरीर और उसमें आत्मा रूपी बत्ती को जलाने के लिए घी या तेल के रूप में परमात्मा का ज्ञान चाहिए, जिससे वो आत्मा हमेशा जागृत रहेगी और अपने प्यार, शान्ति और खुशी के ओरिजनल संस्कारों से अपने आस पास की आत्माओं को भी जागृत कर देगी। इसलिए जब भी जीवन में कोई तूफान आए और हमारे दीये की लौ थोड़ा टिमटिमाने लगे तो हमें तुरन्त कुछ क्षण रुककर परमात्मा की याद में उनके ज्ञान का घी डालकर अपनी लौ को वापस तेज़ कर देना है।

नये साल, नये युग की नयी शुरुआत

भारत के कुछ क्षेत्रों में दीपावली का पर्व नये साल के रूप में भी मनाया जाता है। तो जब हम अपने रियल अस्तित्व को जान जाते हैं, आत्मा जागृत हो जाती है तो हमें, सभी को नये साल के साथ-साथ नये युग की दुआएं व शुभकामनाएं देनी चाहिए, क्योंकि ऐसे ही हम इस सृष्टि पर सतयुग ला सकते हैं, क्योंकि हम मन और बुद्धि से सबको देने वाली आत्माएं हैं जिससे सभी के संस्कार बदल जाएंगे और सृष्टि पर एक नया सतयुगी सवेरा आयेगा।

स्वस्तिक क्यों बनाते हैं...

दीपावली पर्व या अन्य पूजन की शुभ शुरुआत करते हुए बनाए जाने वाले 'स्वस्तिक चिन्ह' के आध्यात्मिक महत्व को समझते हैं। हम सभी दीपावली के दिन स्वस्तिक बनाते हैं और श्रीलक्ष्मी जी का आह्वान करते और गणेश-लक्ष्मी का पूजन करते हैं।

स्वस्तिक चिन्ह का रियल अर्थ

स्वस्तिक का सही आध्यात्मिक अर्थ है अस्तित्व, जोकि आत्मा की यात्रा को दर्शाता है। स्वस्तिक की चार भुजाएं चार युगों के बारे में बताती हैं कि पहले आत्मा कहाँ थी, अभी कहाँ है और आगे कहाँ जाना है? तो अगर हम देखें तो स्वस्तिक का पहला भाग एक हॉरिजोन्टल लाइन है जोकि देने का भाव दर्शाती है। जैसे हाथ देने की मुद्रा में होते हैं। ये सतयुग को दर्शाता है जिसे हम स्वर्ग, पैराडाइज़, जन्नत, बहिश्त आदि नामों से भी जानते हैं। इस युग में सभी आत्माएं भरपूर थीं, उनकी ज्योति जगी हुई थी, वह सबको दुआएं देने वाली थीं।

सतयुग के बाद आता है त्रेतायुग, जिसमें स्वस्तिक की रेखा नीचे की ओर जाती है जिसका अर्थ है, आत्मा की शक्ति थोड़ी-थोड़ी कम होना शुरू हो गई है।

उसके बाद द्वापरयुग में स्वस्तिक की रेखा का हाथ जैसे मांगने की मुद्रा में आ जाता है, जिसमें आत्मा भूल गई कि वो भरपूर है। वह जो सबको देने वाली आत्मा थी, अब उसने दूसरों से मांगना शुरू कर दिया है।

और आखिर में कलियुग माना, जब मांगने के बाद भी नहीं मिला तो, स्वस्तिक का हाथ ऊपर की ओर चला जाता है। यानी मारने की मुद्रा में आ जाता है, तब शुरू होता है कलह-क्लेश का युग।

इस तरह से हमने स्वस्तिक के सही अर्थ को समझा। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि, अभी घोर कलियुग का, अंधकार का समय चल रहा है जिसके बाद सतयुगी सवेरा आना ही है।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ शिव उपहार भवन में इस वर्ष की थीम 'विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान' पर आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूरज,माउंट आबू। मंचासीन हैं ब्र.कु. विमला दीदी, ब्र.कु. गीता बहन, महामंडलेश्वर अखिलेश्वरानन्द गिरि जी महाराज, लोकसभा सांसद आशीष दुबे,जबलपुर तथा अन्य।

चेन्नई-अड्यार(तमिलनाडु)। चेन्नई के अड्यार, पुरम स्थित प्रतिष्ठित मुथमिझ पेरवई,टीएन राजरत्तिनम कलई अरंगम में ब्रह्माकुमारीज़ के नौवहन, विमानन और पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित 'सफलता की ओर उड़ान' शीर्षक पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. सुखमणि दीदी,क्षेत्रीय समन्वयक एस.ए.टी. प्रभाग,अड्यार, राजयोगिनी ब्र.कु. कमलेश दीदी,राष्ट्रीय समन्वयक एस.ए.टी. प्रभाग,सांताक्रूज़,मुंबई, पूर्व कुलपति डॉ. पी. विजयन,भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय, सेवानिवृत्त वाणिज्यिक आर. राधाकृष्णन,एयर इंडिया, सुरेन सुलसोयम,डीन अमिलता ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, श्रीहरन बालन,प्रबंध निदेशक,मधुरा ट्रैवल सर्विसेज़, कलैमामणि जे. बालसुब्रमणयन,सावित्री फाउंडेशन और जेबी कल्चरल फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी, कैप्टन के. कार्तिक,प्रधानाचार्य,एएमईटी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, के.एम. सुंदरम,पूर्व उपाध्यक्ष आईआरएस,प्रेस ग्रुप ऑफ शिपिंग, बी. जॉन कैनेडी,प्रधानाचार्य,चेन्नई अमिर्थ इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एविएशन, एडी मोहनन,पूर्व समन्वयक,वाणिज्यिक,एयर इंडिया,सर्वेश्री सत्यगिरी ग्रुप ऑफ कंपनीज़ तथा अन्य अतिथिगण।

पणजी-गोवा। गोवा के सचिवालय के सभी प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए 'तनाव प्रबंधन' विषय पर आयोजित सत्र के पश्चात् समूह चित्र में वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी तथा अन्य प्रशासनिक कर्मचारीगण।

ग्वालियर-म.प्र.। द्वितीय वाहिनी विशेष सशस्त्र बल एसएएफ बटालियन में 'नशा मुक्ति तनाव प्रबंधन एवं सकारात्मक चिंतन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रोशनी, ब्र.कु. सुरभि, मोटिवेशनल स्पीकर एवं वरिष्ठ राजयोग ध्यान प्रशिक्षक ब्र.कु. प्रहलाद, मेडिकल ऑफिसर डॉ. ओ.पी. वर्मा, निरीक्षक अजय रावत, उप निरीक्षक सुरेन्द्र गोयल, प्रधान आरक्षक बी.आर. त्यागी, उप सेनानी परवेज़ अनवर खान तथा अन्य जवानों सहित पुलिस अधिकारी।

रॉंची-झारखंड। रॉंची के राजभवन में भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु से स्नेह मिलन के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. प्रदीप तथा अन्य ब्रह्माकुमार भाई।

खरगोन-अन्नपूर्णा नगर(म.प्र.)। माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट कर माउंट आबू आने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु. किरण।

नरसिंहपुर-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के दिव्य संस्कार भवन के 30वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम, जालम सिंह पटेल,पूर्व राज्य मंत्री, आशुतोष अवस्थी,शुगर मिल प्रबंधक,करेली, समाजसेवी चन्द्र शेखर साहू, समाजसेवी डॉ. अजीत दुबे, समाजसेवी इंजीनियर रूपेश तिवारी, सतेन्द्र गुप्ता, गिरीश जायसवाल, विनय जैन तथा अन्य।

पन्ना-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'योग संगम' सामूहिक योगा अभ्यास कार्यक्रम में योगा करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता, विधायक बृजेन्द्र प्रताप सिंह, जिलाधिकारी सुरेश कुमार, पुलिस अधीक्षक साईं कृष्ण एस. थोटा तथा अन्य।

राजनांदगांव-छुरिया(छ.ग.)। 'राजयोग मेडिटेशन शिविर' का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पुष्पा, विधायक भोलाराम साहू, नगर पंचायत अध्यक्ष अजय पटेल, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सितेश जैन तथा अन्य।

बिलासपुर-राजकिशोर नगर(छ.ग.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र एवं देश की दूसरी सबसे बड़ी कोयला उत्पादन कम्पनी एस.ई.सी.एल. संस्थान द्वारा वसन्त विहार स्थित टाउनशिप ग्राउंड में 'योग से योग' थीम पर 'योग संगम' कार्यक्रम के पश्चात् राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. गायत्री को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए एस.ई.सी.एल. संस्थान की प्रथम महिला श्रीमती शशि दुहन। साथ हैं एस.ई.सी.एल. संस्थान के सी.एम.डी. हरीश दुहन, योग की मास्टर ट्रेनर तथा अन्य।

मानसिक तनाव कैसे दूर हो...!!!

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका

मेडिटेशन माना माइंड को रिलेक्स करना...

- गतांक से आगे...

समस्याओं में हमें समाधान प्राप्त हो जाए उसके लिए कोई दवाई तो है नहीं। ले लिया और खत्म हो गई बात, नहीं। उसके लिए भी हमें आवश्यकता है जागृति लाने की। तब हम आने वाले समय में खुद को भी हैंडल कर सकेंगे, परिस्थिति को भी हैंडल कर सकेंगे, और दूसरों को भी सहारा दे सकेंगे। धैर्य दे सकेंगे, और ये समय बहुत फास्ट दिखाई दे रहा है। अब आगे पढ़ेंगे...

अब ये सब होगा कैसे? जब हमारी स्पिरिचुअल इम्युनिटी बढ़ेगी। और उसको बढ़ाने के लिए हमें चाहिए तीन चीज़ें - 1. ठीक से भोजन चाहिए। वो भोजन नहीं जो हम शरीर को देते हैं, मन का भोजन। और मन का भोजन क्या है, चिंतन। अच्छा चिंतन चाहिए। अच्छा चिंतन कहाँ से मिलेगा? ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान एक मात्र स्रोत है जहाँ से हमें अच्छा चिंतन मिलता है। ये अच्छा चिंतन भोजन है मन का। मन के द्वारा आत्मा को प्राप्त होता है। मन सशक्त बनता है, आत्मा शक्तिशाली बनती है लेकिन आज अगर किसी को भी कहा जाये कि ज्ञान की, आध्यात्मिक ज्ञान की बातें सुनने के लिए आओ, तो क्या कहेंगे? टाइम नहीं है। टाइम कहाँ जाता है? टाइम अगर प्रैक्टिकल देखा जाए तो मनुष्य के पास है। ऐसे नहीं कि नहीं है।

जैसे मान लो कि किसी को हार्ट अटैक आये और वो डॉक्टर के पास जाता है और डॉक्टर साहब उसे कहेगा कि अगर जीना है तो रोज़ सुबह आधा घंटा पैदल चलना होगा। अगर तब भी वो डॉक्टर साहब से कहे कि सुबह तो बहुत मुश्किल है, मेरा सारा कारोबार सुबह-सुबह शुरू हो जाता है, सुबह तो आधा घंटा निकालना बड़ा मुश्किल है, और शाम को भी देखेंगे कि आधा घंटा मिलेगा तो जाऊंगा। तो डॉक्टर साहब क्या कहेंगे? मरो फिर, यही कहेंगे। अगर आपको खुद को हेल्थ के विषय में जागृति नहीं है, अगर आप अपने लिए टाइम नहीं निकाल सकते तो फिर तो मौत को कोई रोक नहीं सकता है। अगर उसको जीना है तो टाइम मैनेजमेंट तो करना होगा ना!

ठीक इसी तरह मन को सशक्त करने के लिए, आत्मा को सशक्त करने के लिए उसका भोजन है ज्ञान। ज्ञान का मनन-चिंतन रोज़ कम से कम आधा-पौना घंटा करें। अगर हमें आने वाले समय के लिए अपने आपको तैयार करना है तो। दूसरा- मन को आराम भी चाहिए। आराम कैसे मिलेगा? मन को रिलेक्स करना बहुत जरूरी है। और रिलेक्सेशन टेक्निक श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने अर्जुन को ध्यान-योग सिखाया। मेडिटेशन, जब हम मेडिटेशन में बैठते हैं तो हम अपने मन की गति को शांत करते हैं। इतना फोर्स क्यों चल रहा है? किसी साइकेट्रिक ने बताया कि मनुष्य अगर कम से कम गति से सोचे तो भी एक मिनट में उसके मन के अन्दर 25 से 30 विचार आ जाते हैं। सोचो कम से कम

> **ये नहीं कि बातें नहीं आयेंगी, ये नहीं लोग उल्टी हरकतें नहीं करेंगे, सब होगा। लेकिन अगर आपका माइंड फोकस है तो आप खुद को हैंडल कर सकेंगे।**

गति से सोचे तो और अधिक से अधिक गति से सोचे तो पचास विचार। और टेंशन जब होता है तब 55-60 विचार आ जाते हैं एक मिनट में।

हर मनुष्य के मन में चार प्रकार के विचार आते हैं। पहले प्रकार के विचार हैं- पॉज़िटिव विचार,अच्छे विचार,वैल्यू बेस्ड थॉट्स। दूसरे हैं- निगेटिव विचार,बुरे विचार, हर बात में बुराई को सोचना, कमज़ोरियों को सोचना, डर-भय को लेकर विचार आना। तीसरे प्रकार के विचार हैं-आवश्यक विचार,कारोबार के विचार, ये करना है, वो करना है, इसको कहना है और चौथे प्रकार के विचार हैं- फालतू विचार। जब मन के पास कुछ सोचने के लिए नहीं है तो बीती हुई बातों को सोचना है। अगर ऐसा करते तो ऐसा होता, ये कहते तो अच्छा होता। लेकिन अब तो हो गया ना। अब क्या करना है वो नहीं सोचते। थोड़ा-सा अगर सेल्फ एनालिसिस करें तो वर्तमान समय दुनिया में मनुष्य के अधिकतर विचार कौन से होते हैं इन चारों में से? निगेटिव विचार आते हैं, फालतू विचार आते हैं और पॉज़िटिव विचार ना के बराबर। इसलिए रिएक्शन ज्यादा निकलता है। तो मेडिटेशन माना माइंड को रिलेक्स करना। और जब पॉज़िटिव विचारों का चिंतन हम आरम्भ करते हैं तो धीरे-धीरे हमारी मनोस्थिति पॉज़िटिव होने लगती है, सशक्त होती है, शक्तिशाली होती है।

तो रोज़ सुबह-सुबह 20 मिनट मेडिटेशन अगर आपने कर लिया तो देखिएगा कि आप अपने को कितना चार्ज महसूस करेंगे। माइंड पॉवरफुल होगा। क्यों 20 मिनट कहा मैंने? क्योंकि मेडिकल साइंस द्वारा ये प्रमाणित है कि एक व्यक्ति अगर पांच मिनट गुस्सा करता है ना, तो दो घंटे की कार्यक्षमता उसकी जल जाती है। वो दो घंटा क्या करेगा? दस लोगों को ढूंढेगा, वहाँ अपनी बात रखेगा, देखो ये रोज़ ऐसा करता है इसलिए मुझे गुस्सा करना पड़ा। जब दस लोग ये कहने वाले मिल जाते हैं कि बहुत अच्छा किया, तब जाकर थोड़ी ठंडक होती है कि मैंने जो किया ना वो गलत नहीं किया। और दस में से एक ने कह दिया कि आपने ठीक नहीं किया तो क्या होगा? फिर से भड़क जाएंगे।

सोचो जिस दिन सुबह-सुबह आपने बीस मिनट गुस्सा कर लिया तो आठ घंटे की कार्यक्षमता जल जाती है। कभी-कभी आपने जीवन में अनुभव किया होगा कि कोई-कोई दिन बहुत खराब जाता है, कोई काम नहीं होता है। कोई काम में सक्सेस नहीं होता है। तो फिर क्या कहते हैं कि पता नहीं आज किसका मुँह देखा था। किसी का नहीं खुद का ही देखा था आइने में। तो इसीलिए कहा सुबह-सुबह बीस मिनट मेडिटेशन करो। माइंड को फोकस करो, एकाग्र करो। ये नहीं कि बातें नहीं आयेंगी, ये नहीं लोग उल्टी हरकतें नहीं करेंगे, सब होगा। लेकिन अगर आपका माइंड फोकस है तो आप खुद को हैंडल कर सकेंगे। दूसरे व्यक्ति को हैंडल कर सकेंगे और सिचुएशन को भी हैंडल कर सकेंगे। तो मॉर्निंग मेडिटेशन और शाम को 20 मिनट मेडिटेशन सोने से पहले। ताकि नींद अच्छी आए और सुबह फ्रेश होकर आप कार्य कर सकें। इतना टाइम मिलेगा खुद के लिए कि नहीं मिलेगा? अगर आने वाले समय के लिए अपने आपको चार्ज रखना हो, पॉवरफुल बनाना हो तो आप एक लीडर बनें। ताकि अनेकों को आप गाइड कर सकें। सही रास्ता दिखा सकें। उसके लिए खुद के लिए खाली 24 घंटे में से एक घंटा निकालना है। कर सकते हैं?

राजकोट-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ के हैप्पी विलेज में शिवशक्ति लीडरशिप-एक दिवसीय अनुभावनात्मक रिट्रीट में ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका एवं ज्ञानसरोवर निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुदेश दीदी, गुजरात ब्रह्माकुमारीज़ ज़ोन निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी, डॉ. ब्र.कु. सुनीता,शान्तिवन, विधायक डॉ. दर्शिता शाह, मेयर श्रीमती नयनाबेन पेढड़िया, श्रीमती प्रीति गुगनानी,इनर व्हील के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष,भारत, मिस सिद्धि जोहरी,मिस इण्डिया और नेशनल ब्रान्ड एम्बेसडर महिला सशक्तिकरण, दर्शन पटेल,राजकोट अध्यक्ष,क्रेडाई महिला विंग,गुजरात निदेशक,डेकोरा ग्रुप, श्रीमती ज्योति तिलवा,संस्थापक-उमा सारथी फाउंडेशन,राजकोट, प्रिंसिपल श्रीमती सोनल फड्डु,सरोजनी नायडू गर्ल्स हाई स्कूल, डॉ. दर्शन पंड्या तथा अन्य।

घाटकोपर-मुंबई(महा.)। भरतनाट्यम अरंगेत्रम समारोह में भरतनाट्यम नृत्य कलाकार महेक भिमानी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. विष्णुप्रिया बहन।

ब्र.कु. शिवानी बहन, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ

रिगार्ड और रिस्पेक्ट के बीच अंतर समझने से व्यवहार अच्छा रहेगा

– रिगार्ड का अर्थ संदर्भ पर निर्भर करता है, जबकि रिस्पेक्ट एक विशिष्ट भावना और व्यवहार है जो दूसरों की गरिमा को स्वीकार करता है।

– व्यवहार में रिगार्ड बदलता रहता है परन्तु रिस्पेक्ट, सर्व के प्रति एक भीतरी सम्मान की भावना रखनी चाहिए।

जब भी किसी से मिलेंगे, किसी के साथ काम करेंगे, रिश्ता तो निभाएंगे लेकिन हर क्षण ये याद रखेंगे कि वो 'रिश्ता' और वो 'रोल' निभाने वाले वो भी कौन हैं? वो भी आत्मा हैं। अभी तक हमारे सारे जो इंटरएक्शन होते थे वो किस आधार पर होते थे? वो रिश्ता, मैं रिश्ता, वो रोल और मैं रोल। रोल टू रोल कनेक्शन और रिलेशन टू रिलेशन कनेक्शन। लेकिन उसमें क्या होता था, कोई किसी से ऊँचा है, कोई किसी से नीचा है। तो कोई किसी से इन्फीरियर फील करता है, कोई किसी से सुपीरियर फील करता है। लेकिन अब हमें स्मृति आई है, वो सिर्फ एक रोल है। हम कौन हैं? मैं एक आत्मा हूँ। वो कौन है? वो भी एक आत्मा है। जब आत्मा और आत्मा एक-दूसरे से बात करेंगे तो कौन सीनियर और कौन जूनियर होगा? कौन बड़ा होगा और कौन छोटा होगा? तो सीनियर और जूनियर उम्र में बड़े और छोटे, रिश्ते में बड़े और छोटे। वो सब होगा, समाज की मर्यादाओं के अनुसार भी चलेंगे। वो होता है रिगार्ड। जैसे कोई सीनियर आयेगा तो हम खड़े हो जाएंगे। हम कहीं जायेंगे तो कोई और खड़ा हो जाएगा। ये रिगार्ड है रोल के लिए।

व्यवहार में एक छोटी-सी चीज़ को जोड़ना होगा

लेकिन अब उसमें जो छोटी-सी चीज़ को जोड़ देंगे, अटेन्शन रखेंगे कि रिगार्ड रोल के लिए होगा लेकिन सम्मान हर एक आत्मा के लिए होगा। ये नहीं कि किसी से बहुत प्यार से बात की, किसी से ऐसे ही बात करनी है। किसी से कुछ ज़्यादा ही झुक-झुक कर बात की और किसी से अहंकार से बात की। क्या ये हो सकता है कि सभी के साथ व्यवहार एक समान हो? हो सकता या नहीं हो सकता? सभी के साथ जो रिगार्ड(आदर) है वो बाह्य है, वो अलग-अलग होगा। जो अंदर से रिस्पेक्ट(सम्मान) है, वो एक समान होगा।

सबके साथ एक समान होने से अभिमान खत्म होगा

सबके साथ समान होने से व्यवहार सबके साथ समान हो सकता है? सबके साथ एक समान व्यवहार होने से क्या फायदा होगा? सबके साथ एक समान होने से अभिमान जो होगा वो सोल कॉन्शियस मतलब अहंकार खत्म हो जाएगा। अहंकार सभी विकारों की जड़ है। जहाँ अहंकार होगा वहाँ काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत होगा। अहंकार मतलब ईगो व ईगो मतलब बॉडी कॉन्शियस। अब मैं कौन हूँ? मैं एक शांत स्वरूप, शक्तिस्वरूप आत्मा हूँ, ये मेरा रोल है। रोल आवश्यक है। लेकिन वो मेरा रोल है। वो मैं रोल नहीं हूँ। अभी तक क्या समझते थे? कि वो मैं रोल था। बस 'मैं' ही मैं हूँ, ये मेरा रोल है, ये मेरी जिम्मेदारी है, ये मेरी पोजीशन। रोल बदलते रहेंगे, रिश्ते भी बदलते रहेंगे। पहले आप किसी के बच्चे थे, फिर आपके बच्चे हैं, रिश्ते बदल गये। तो रिश्ते भी बदलते रहेंगे, रोल भी बदलते रहेंगे, एक चीज़ वही रहेगी कि 'मैं' एक आत्मा हूँ, दूसरी आत्मा से बात कर रही हूँ। अब वो प्रैक्टिस करना है। सबसे मिल रहे हैं, पद अलग-अलग हैं लेकिन हम किससे बात कर रहे हैं? हम 'पद-पोजीशन' से बात कर रहे हैं या व्यक्ति से बात कर रहे हैं? हम किससे बात कर रहे हैं? अगर हम सामान्य रूप से देखें तो हम लोगों से बात नहीं कर रहे होते हैं, हम किससे बात कर रहे होते हैं? हमारे बात करने का तरीका चेंज हो जाता है, हमारा व्यवहार करने का तरीका चेंज हो जाता है। और जितनी बार वो चेंज-चेंज होता रहता है वो अपने ओरिजनैलिटी से हटता जाता है।

तो ठीक है ये प्रैक्टिस करेंगे? क्या प्रैक्टिस करेंगे? जो भाई आपकी कार चला रहे हैं वो कौन हैं? आपमें और उसमें कौन ऊँचा है? ये एक फिल्म की तरह है। एक फिल्म कैसे होती है? एक्टर अलग-अलग होते हैं, उनके रोल अलग-अलग होते हैं लेकिन एक्टर उसमें रोल के हिसाब से सीनियर और जूनियर नहीं होता। अब आत्मा भी अगर हमें देखना है कि कौन, कैसी आत्मा है? वो रोल के अनुसार नहीं, संस्कारों के अनुसार पता चलेगा। इसीलिए संस्कारों अनुसार कहते हैं ये महान आत्मा है, ये पुण्य आत्मा है, ये धर्म आत्मा है। टाइटल किसको मिल रहा है? आत्मा को मिल रहा है। किस आधार पर मिल रहा है? आत्मा के संस्कार और कर्मों अनुसार।

तो ध्यान रखना है- व्यवहार में, बातचीत में मिलने पर कि हम रोल के आधार पर रिगार्ड भी रखेंगे और मैं आत्मा हूँ, हम समान हैं ये याद भी रखेंगे तो सबके प्रति सम्मान बना रहेगा।

देवघर-झारखंड। देवघर एम्स के प्रथम दीक्षांत समारोह के अवसर पर आमंत्रित भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का स्वागत करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीता, ब्र.कु. शिल्पी, ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. सुनील, ब्र.कु. सत्यनारायण, डॉ. राजेश प्रसाद तथा अन्य।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व पर लोक निर्माण विभाग मंत्री राकेश सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. वर्षा, ब्र.कु. ईशा, डॉ. श्याम रावत व इंजीनियर परेश।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. लक्ष्मी, जन अभियान के उपाध्यक्ष मोहन नागर, विधायक अमर सिंह यादव, नगर अध्यक्ष कैलाश बाई, टी.आई. शिवचरण यादव तथा योग करते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on

E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

खरगोन-म.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर उद्योगपति कैलाश अग्रवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. देवकन्या।

सरायपाली-छ.ग.। नगर पालिका सीएमओ दिनेश यादव को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अहिल्या।

बिलासपुर-टिकरापारा(छ.ग.)। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर एस.ई.सी.एल. के पी.आर.ओ. सनीश चंद्रा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू।

सटाना-महा.। बस डिपो में डिपो मैनेजर राजेन्द्र अहीरे को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजुला। साथ है अन्य स्टाफ।

सूरत-अडाजन(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'आई चेकअप कैंप' का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. दक्षा, रैना भट्ट तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5, आबू रोड, राज. 307510

संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088

Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक - ₹-200, तीन वर्ष - ₹- 600, आजीवन - ₹- 6000

Website: www.omshantimedia.org

नाशपाती पौष्टिक गुणों से भरपूर फल है जिसका आयुर्वेद में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। नाशपाती ऐसा फल है जो पौष्टिक, रसीला और औषधीय गुणों से भरपूर होता है। वैसे तो नाशपाती मधुर, एसिडिक या अम्लीय गुणों वाली, ठंडे तासीर की, वात को कम करने वाली, पित को भी कम करने में मदद करने वाली तथा धातु को बढ़ाने वाली होती है। यह विटामिन, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट्स का अच्छा स्रोत है।

स्वास्थ्य

नाशपाती करे बीमारियों का नाश

नाशपाती अपने ढेर सारे पौष्टिकता के गुणों के कारण रोगों का उपचार करने में मदद करती है। चलिए नाशपाती के फायदे के बारे विस्तार से जानते हैं कि ये कैसे और किन-किन रोगों में फायदेमंद है।

आँख संबंधी रोगों से राहत

आँख में जलन या आँख में दर्द जैसे किसी भी बीमारी में नाशपाती बहुत फायदेमंद होती है। नाशपाती को पीसकर नेत्र के बाहर चारों तरफ लगाने से नेत्र रोगों में लाभ होता है।

अग्निमांद्य या अपच में फायदे

डाइजेस्टिव ट्रैक्ट में सूजन या इंफेक्शन(संक्रमण) होने पर पेट में सूजन हो जाता है जिसके कारण बदहजमी, एसिडिटी जैसी समस्याएं होने लगती हैं। 15-20 मिली नाशपाती फल के रस में 500 मिग्रा पिप्पली चूर्ण मिलाकर पिलाने से भूख लगती है।

अर्श या पाइल्स से दिलाए राहत

नाशपाती के मुरब्बे में 250मिग्रा नागकेसर चूर्ण मिलाकर सेवन करने से बवासीर में लाभ होता है। इसके सेवन से दर्द और खून का निकलना कम होता है।

कब्ज से राहत पाने में फायदेमंद

नाशपाती में मौजूद रेचन गुण के कारण यह कब्ज की परेशानियों से राहत दिलाने में लाभदायक होता है। इससे आँतों में जमी गन्दगी को आसानी से मल रूप में निकाला जा सकता है।

कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में लाभकारी

नाशपाती में एक रिसर्च के अनुसार प्रचुर मात्रा में पेक्टिन नामक तत्व पाया गया जोकि कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में मदद करता है।

एनीमिया से बचने के लिए लाभकारी

एनीमिया एक ऐसी बीमारी है जो पित्त दोष के प्रकुपित होने के कारण होती है। इसमें नाशपाती के सेवन से लाभ होता है क्योंकि नाशपाती शीत वीर्य होने के कारण पित्त को शांत करती है साथ ही यह शरीर को आवश्यक पोषण प्रदान करती है। इसके कारण यह एनीमिया के लक्षणों को ही दूर करने में मदद करता है।

त्वचा रोगों से राहत दिलाए

प्रदूषण के कारण आजकल त्वचा संबंधी बहुत तरह से रोग होने लगे हैं। नाशपाती के पत्तों को पीसकर त्वचा पर लगाने से त्वचा संबंधी समस्याओं में लाभ होता है तथा घाव में लगाने से घाव जल्दी भरता है।

नाशपाती का उपयोगी भाग

आयुर्वेद में औषधि के तौर पर नाशपाती के फल और पत्ते का सेवन किया जाता है।

नाशपाती का इस्तेमाल कैसे करना चाहिए

बीमारी के लिए नाशपाती के सेवन और इस्तेमाल का तरीका पहले ही बताया गया है। अगर आप किसी खास बीमारी के इलाज के लिए नाशपाती का उपयोग कर रहे हैं तो आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह जरूर लें।

नाशपाती खाने के नुकसान

नाशपाती के अधिक सेवन से कफ दोष बढ़ता है। इसके कारण खांसी-जुकाम होने लगता है क्योंकि इसमें कफ को बढ़ाने वाला शीत गुण पाया जाता है।

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। युवाओं के मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास के उन्नति के लक्ष्य से 'नई उमंग नई तरंग' प्रोजेक्ट का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए तनाव प्रबंधन विशेषज्ञ ब्र.कु. पूनम बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका डॉ. ब्र.कु. अरुणा, सहसंचालिका ब्र.कु. पूनम, पूर्व सांसद डॉ. हेमांग जोशी, बिल्डर उमेश दवानिया, प्रो. उमेश डांगरवाला, ज्ञान यज्ञ स्कूल प्रिंसिपल भरत सक्सेना पंडया एवं उद्योगपति जीतू ठक्कर।

मेहसाणा-गुज.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ के मोढली पैलेस में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए मेहसाणा उपक्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. सरला दीदी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. संगीता,कडी, महंत श्री 108 प्रकाश पुरी महाराज,मेहसाणा, पूजा योगा क्लासेज, कडी के मालिक घनश्याम पटेल एवं सी.आई.एस.एफ. के कमांडेंट अनिकेत अग्रवाल।

राजकोट-पापकवाडी(गुज.)। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर राजकोट के ए.सी.पी. पठान सर को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योत्सना।

बेंगलुरु-कर्नाटक। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर इस वर्ष की थीम 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' पर कुवेम्पु खेल के मैदान में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पविता बहन,कम्मनहल्ली, ब्र.कु. ज्योति,जे.सी. नगर, ब्र.कु. श्रीलक्ष्मी,हेब्बल, ब्र.कु. जयंती,वसंत नगर, ब्र.कु. सुधा बहन,एचएएल, ब्र.कु. बिन्दु,कुमारा पार्क, ब्र.कु. सोनी,संजय नगर, ब्र.कु. सुमिता,क्षेत्रीय समन्वयक शिक्षा प्रभाग, नादोजा श्री एस. श्रदक्षा,अध्यक्ष रमणश्री ग्रुप ऑफ कम्पनीज,बेंगलुरु, श्रीनिवास राजु,अध्यक्ष श्री कृष्णदेवराय एजुकेशनल ट्रस्ट, श्रीमती नंदीता सुब्बाराव,सामाजिक कार्यकर्ता, डॉ. साई कृष्णा बी नायडू,निदेशक स्पाइन एंड ज्वाइंट सर्जरी, विक्रम ऑफ हॉस्पिटल व मणिपाल हॉस्पिटल,हेब्बल,बेंगलुरु तथा अन्य।

मुंबई-मुलुंड(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर चंदन बाग स्कूल के हॉल में आयोजित कार्यक्रम में योग करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें तथा अन्य। मौके पर उपस्थित रहे उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. गोदावरी दीदी, ब्र.कु. वर्षा।

धड़गांव-महा.। जिला परिषद स्कूल में आयोजित तीन दिवसीय राजयोग कोर्स कार्यक्रम के पश्चात् मुख्याध्यापक मणिलाल नावदे को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता।

अहमदाबाद-इंडिया कॉलोनी(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र द्वारा विमान दुर्घटना में मारे गए सभी दिवंगत आत्माओं को दीप जलाकर भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। इंदौर एयरपोर्ट पर स्थित सी.आई.एस.एफ. कार्यालय में जवानों के लिए आयोजित 'नशा व तनाव मुक्त कार्यशाला' के पश्चात् समूह चित्र में राजयोगी ब्र.कु. नारायण, इंस्पेक्टर मनीष, डॉ. महेन्द्र सिंह होरा, तथा अन्य जवान।

बगडोना-सारणी(म.प्र.)। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत एम.जी.एम. स्कूल,बगडोना में आयोजित कार्यक्रम में स्कूल के बच्चों को नैतिक मूल्यों को जीवन में लाने एवं व्यसनों को दूर करने के उपाय बताते हुए ब्र.कु. सविता।

परमात्म ऊर्जा

अशान्ति के बीच शान्ति की स्थिति बनाने का अभ्यास चाहिए

साइलेन्स की स्थिति में जब चाहो तब स्थित हो सकते हो क्योंकि आपका अनादि स्वरूप ही स्वीट साइलेन्स है। आदि स्वरूप आवाज़ में आने का है लेकिन अनादि अविनाशी संस्कार साइलेन्स के हैं। अनादि संस्कार इमर्ज करने से स्वीट साइलेन्स का अनुभव होगा। चारों तरफ कितना भी वातावरण हलचल वाला हो लेकिन आवाज़ में रहते आवाज़ से परे की स्थिति का अभ्यास अभी बहुत काल का चाहिए। शान्त वातावरण में शान्ति की स्थिति बनाना यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन अशान्ति के बीच आप शान्त में रहो यही अभ्यास चाहिए। चाहे अपनी कमज़ोरियों की हलचल हो, संस्कारों के व्यर्थ संकल्पों की हलचल हो, ऐसी हलचल के समय स्वयं को अचल बना सकते हो कि टाइम लग जाता है? टाइम लगना यह कभी भी धोखा दे सकता है। समाप्ति के समय में ज्यादा समय नहीं मिलना है। फाइनल रिज़ल्ट का पेपर कुछ सेकण्ड और मिनट का ही होना है लेकिन चारों ओर की हलचल के वातावरण में अचल रहने पर नम्बर मिलना है इसलिए यह रूहानी अनादि स्वीट साइलेन्स में रहने की एक्सरसाइज़ का अभ्यास खूब करो तो फाइनल पेपर बहुत सहज ही पास कर पास विद ऑनर हो जाएंगे। पहले से ही बता देते हैं कि यह पेपर आना है लेकिन नम्बर बहुत थोड़े समय में मिलना है। देह, देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार, व्यक्ति व वैभव, वायब्रेशन सब होते हुए भी अंत में आकर्षण न करें, इसी को कहते हैं, नष्टोमोहा समर्थ स्वरूप। लोग चिल्लाते रहें और आप अचल रहो। प्रकृति और माया भी सब लास्ट दाँवपेच लगाने के लिए अपने तरफ कितना भी खींचें लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। प्रकृति और माया में भी जितनी शक्ति होगी, वह ट्रायल करेगी। उनकी भी लास्ट ट्रायल और एक तरफ आप की लास्ट कर्मातीत स्थिति और दूसरी तरफ कर्मबंधन स्थिति होगी। दोनों तरफ की बहुत पॉवरफुल सीन होगी। वह भी फुल फोर्स से और यह भी फुल फोर्स से आमना-सामना होगा लेकिन सेकण्ड की विजय, विजय के नगाड़े बजाएगी।

कथा सरिता

अहंकार भी काम का

महाराणा प्रताप ने जंगलों में अपार कष्टों को झेलते हुए एक बार कमज़ोरी का अनुभव किया। वन में बच्चों के लिए बनाई गई घास की रोटी भी जब कोई जानवर उठा ले गया तो मानसिक रूप से वे टूट गए। उस समय उन्होंने स्वयं को बहुत दयनीय स्थिति में पाकर अकबर से संधि कर लेनी चाही। उनके एक भक्त- चारण को इस बात का पता चला तो उसने महाराणा को एक दोहा लिखकर भेजा। उसमें लिखा था कि- इस धरती पर हिन्दू कुलरक्षक एक आप ही थे, जो मुगल बादशाह से लोहा लेते रहे। किसी भी स्थिति में हार नहीं मानी, मस्तक गर्व से सदा ऊँचा रखा।

वह मस्तक अब अकबर के सामने झुकने जा रहा है, तो हम स्वाभिमानी मेवाड़ी किसकी शरण लें? आपका निर्णय हमें इसी तरह आश्चर्यचकित करता है, जैसे सूर्य को पूरब की बजाए पश्चिम में उगते देखने पर होता है। कहते हैं कि उस एक दोहे को पढ़कर महाराणा का स्वाभिमान पुनः जागृत हो गया।

संधि पत्र को फाड़कर फेंक दिया और अपनी शक्ति को फिर से संगठित कर मेवाड़ के शेष भाग को अकबर के अधिकार से मुक्त कराने के प्रयत्न में जुट गए। चारण को धन्यवाद देते हुए लिखकर भेजा कि सूरज जिस दिशा में उगता है, उसी दिशा में ही उगेगा, तुम चिंता मत करो। अहंकार को जगाना कभी-कभी व्यावहारिक जगत में बड़े काम का होता है। लोग किसी प्रसंग में कह देते हैं, इतने बड़े होकर जब आप ही ऐसा काम करेंगे तो किसी अन्य से क्या आशा की जाए! इस बात से आदमी संभल जाता है और कभी अवांछित कार्य नहीं करता।

मृत्यु का भय

एकनाथ के पास एक सेठ आए, बोले-आपका जीवन कितना शान्ति से भरा है। कोई उपाय बताइए, ताकि कभी भी हमें अशान्ति न प्राप्त हो। सदैव आनंद ही आनंद हो। एकनाथ बोले- पहले तो तू अपने आठ दिनों की चिंता कर। तू इतने दिन का ही मेहमान है। इस अवधि में अच्छा जीवन जी ले। उदास मन से वह लौटा तो, पर आते ही वह बदल-सा गया। अपने बुरे व्यवहार के लिए पहले पत्नी से, फिर बच्चों से, फिर मित्रों से क्षमा मांगी। अपने ग्राहकों से भी मिलता रहा। सबसे विनम्र भाव से क्षमा मांगता और प्रभु से निरंतर प्रार्थना करता कि अंत कष्टमय न हो। नौवें दिन वह एकनाथ के पास पहुँचा और पूछा-हे नाथ! आठ दिन तो बीत गए, अब अंतिम घड़ी कब आए? एकनाथ ने पूछा कि यह बता कि तेरे ये आठ दिन कैसे बीते? वह बोला- प्रभु! मुझे मृत्यु के अलावा कुछ भी नहीं दिख रहा था। मुझे मेरे सारे दुष्कर्म याद आए। पश्चाताप ही करता रहा। एकनाथ बोले- तो याद रख! इसी तरह सारी ज़िंदगी जी। हम भी सारा जीवन इसी सोच के साथ जीते हैं। यह देह क्षणभंगुर है। यह याद रखकर परमात्मा का स्मरण करते हुए काम कर। क्या हम भी यह संदेश याद रखकर जी सकते हैं?

रीवा-झिरिया(म.प्र.)। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति धाम में आयोजित सम्मान समारोह कार्यक्रम में उप क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी,भोपाल ज़ोन, डॉ. एल.के. पांडे,आई.एम.ए. के ज़ोनल अध्यक्ष, डॉ. भी.वी. शुक्ला,पूर्व संचालक संजय गांधी हॉस्पिटल,रीवा, डॉ. के.के. परोहा,पूर्व संचालक गांधी मेमोरियल हॉस्पिटल, डॉ. बी.एल. मिश्रा,पूर्व संयुक्त संचालक,स्वास्थ्य सेवाएं,रीवा संभाग, डॉ. एस.पी. सिंह,पूर्व पेडियाट्रिक्स विभाग अध्यक्ष, डॉ. ज्योति सिंह,पूर्व पेडियाट्रिक्स विभाग अध्यक्ष, डॉ. के.के. पाण्डे,विशेषज्ञ आर्थोपेडिक्स ऑर्थोपेडिक्स, गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. अर्चना पांडे, डॉ. अमित त्रिपाठी,संचालक,शाइन ट्रामा हॉस्पिटल, डॉ. प्रदीप सिंह,बीएमओ, डॉ. प्रियंका त्रिपाठी,गायनेकोलॉजिस्ट, डॉ. विकास श्रीवास्तव,वरिष्ठ चिकित्सक तथा अन्य की उपस्थिति रही।

जूनागढ़-गुज.। ब्रह्मा बाबा के लौकिक सुपुत्र नारायण दादा निमित्त श्रद्धांजलि कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. दामिनी। साथ मंचासीन हैं ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. मिना, ब्र.कु. रूपा एवं ब्र.कु. मधु।

माउंट आबू-पांडव भवन(राज.)। ज्ञान चर्चा व मुख्यालय पाण्डव भवन का अवलोकन करने के पश्चात् शान्ति स्तम्भ के सामने समूह चित्र में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम,सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय,भारत सरकार के जावेद अहमद, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीलू दीदी, ब्र.कु. शशिकांत तथा अन्य अधिकारीगण।

इंदौर-गंगोत्री विहार(म.प्र.)। श्री साई गंगोत्री विहार स्थित ब्रह्माकुमारीज़ ज्ञानदीप भवन की 9वीं वर्षगाठ पर आयोजित कार्यक्रम में गुप्ता समाज के सचिव दामोदर गुप्ता, श्रीमान सुरेश गुप्ता, उद्योगपति दिनानाथ बंसल, डॉ. महाजन, व्यवसायी सुशील गोयल तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें आदि की उपस्थिति रही।

वर्धा-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर जागतिक युवा कौशल्य दिन के निमित्त भव्य मार्गदर्शन और गौरव सम्मान कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी बहन, पराग सोमन,मुख्य कार्यकारी अधिकारी,जिला परिषद, वैशालीताई येरावार,उपाध्यक्ष,जिला परिषद, प्रथम गुप्ता,संस्थापक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी,लेट्स राइड इण्डिया, नीता अवगण,सहायक आयुक्त,जिला कौशल्य विकास व रोजगार मार्गदर्शन केन्द्र, चैतन्य देव,उपाध्यक्ष,युवा पीस फाउंडेशन तथा अन्य।

चीन-गुआंगझौ। 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर चीन के गुआंगझौ स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास द्वारा होटल शांग्री-ला में आयोजित भव्य स्वागत समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित ब्र.कु. सपना दीदी, महावाणिज्य दूत शंभू हक्की, सीपीपीसीसी ग्वांगझू समिति के उपाध्यक्ष मेंग हैजी, ग्वांगडोंग विदेश कार्यालय की उप महानिदेशक लियांग होंगजी तथा अन्य महावाणिज्य दूत और राजनयिक दल के सदस्यों व ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही।

मुंबई-घाटकोपर महा.)। ब्रह्माकुमारीज़ योग भवन द्वारा राष्ट्रीय डॉक्टर्स दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में डॉक्टर्स की टीम को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन प्रभारी। कार्यक्रम में उपस्थित रहे प्रख्यात पल्मोनोलॉजिस्ट और क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ डॉ. मानस मेंगर, घाटकोपर मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सचिन भामरे, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. फरीदा वाडिया, राजयोगी ब्र.कु. निकुंज,आध्यात्मिक प्रेरक वक्ता,सुप्रसिद्ध स्तंभकार और ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया विंग के राष्ट्रीय समन्वयक, राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. विष्णुप्रिया तथा अन्य।

परोदा-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर छत्तीसगढ़ कला और संस्कृति के क्षेत्र में स्थानीय कलाकारों के सम्मान समारोह कार्यक्रम में सभी कला प्रेमियों का पटका पहनाकर सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में खड़े हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. चन्द्रकला,रायपुर, जवानदास मानिकपुरी,आकाशवाणी,दूरदर्शन के वरिष्ठ लोक गायक,गीतकार,संगीतकार एवं कबीर भजन सम्राट, मानसिंह पटेल, नारायण महाराज,मंजगिरी।

\- ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

परमात्मा को हम स्वीकार हैं...

आप देखो इस दुनिया में जब हम पैदा हुए बड़े नैचुरल से थे और लोग हमको कहते भी थे, जैसे कोई हमारे घर में मेहमान आता है, छोटा बच्चा कहते हैं कि जैसे भगवान का अवतार हमारे घर में अवतरित हुआ है। और थोड़े दिन बाद जब हम थोड़े बड़े होते हैं तो हमारे जीवन में अड़चन शुरू हो जाती है। क्यों अड़चन शुरू हो जाती है? क्योंकि जैसे हमारे मन में आया कि लोग मुझे प्यार करें, लोग मुझे सम्मान दें, लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करें इसलिए आप उनके जैसा बनना शुरू कर देते हैं। उनकी शर्तों पर चलते हैं। और द्वंद्व में जीना शुरू हो जाता है। इसीलिए कहा जाता है कि इस दुनिया में जिस आदमी ने थोड़ा भी औरों की तरह या किसी भी तरह से बनना चाहा, जैसे ही उसके अन्दर ये चाहना उत्पन्न हुई वहीं से आँखों से प्रकृति को देखते हो तो आँख से प्रकृति आपकी आँखों से ऊर्जा लेती है फिर आपको एक अच्छा फील कराती है। कुछ देना पड़ता है और इसका एक बहुत अच्छा पैरामीटर है भी है कि जब आप बाहर से आते हैं तो आप इतना थक क्यों जाते हैं, क्योंकि वहाँ हमने कुछ मूल्य चुकाया है। क्योंकि वहाँ भोगा, प्रकृति का सुख लिया, चाहे किसी भी चीज़ का सुख लिया लेकिन वहाँ से आने के बाद हम थका हुआ महसूस इसीलिए ही तो करते हैं, क्योंकि हमने कुछ मूल्य दिया और तब जाकर वहाँ से अच्छा फील हुआ। तो भोग का तो मूल्य होना ही है। इसीलिए कहा जाता है कि जैसे ही हम कुछ होना चाहते हैं, कुछ बनना चाहते हैं बाहरी दुनिया की तरह, तो वहीं से डर, भय, चिंता शुरू हो जाती है। परमात्मा कहते हैं कि तुम है। क्योंकि वहाँ से सबकुछ शुरू हो जाता है जो हमने कभी सोचा भी नहीं होता है। इसीलिए हम सबको इस बात को समझना

भय शुरू हो जाता है। भय शुरू हो जाता है का अर्थ है कि हम सभी वैसे है नहीं ना! हैं तो हम कुछ और, लेकिन जब वैसा बनना शुरू करते हैं, वैसा चाहना शुरू कर देते हैं तो उसको बनाना भी तो पड़ेगा। इसीलिए इस दुनिया में कहा जाता है कि भोग का एक मूल्य होता है। कुछ भी हम भोगना भोगते हैं तो उसका एक मूल्य देना होता है। जैसे आप कभी भी किसी पार्क में जायेंगे, किसी अच्छे स्थान पर जायेंगे, किसी हिल स्टेशन पर जायेंगे वहाँ भी आपको एक मूल्य देना होता है, समय का मूल्य, आप वहाँ गये आपने अपनी जैसे हो वैसे मुझे स्वीकार हो। लेकिन वैसे स्वीकार होने के लिए भी तो कुछ शर्तें होंगी ना! तो परमात्मा की पहली शर्त है कि तुम जब इस दुनिया में आये जैसे आये थे वैसे फिर से बन जाओ। आत्मा हमारी शून्य अवस्था में, कम्प्लीट अवस्था में थी, शून्य का मतलब कम्प्लीट ना माइनस, ना प्लस। जिसमें ना कुछ ऊपर है, ना नीचे है, सबकुछ बैलेन्स है। तो जब हम शून्य होते हैं परमात्मा को स्वीकार होते हैं, जीरो होते हैं। लेकिन जैसे ही औरों की शर्तों से अपने जीवन को बदलने की कोशिश करते हैं तो वहीं से ही अस्वीकार हो जाते बहुत ज़रूरी है कि परमात्मा कहते हैं कि तुम आत्मा बनकर जियो। तुम आत्मा थे, तुम आत्मा हो, और हमेशा तुम आत्मा रहोगे। लेकिन कुछ समय के लिए अपने रोल में नीचे आते हैं और रोल को निभाके ऊपर चले जाते हैं। तो इन सारी बातों को समझना, इन बातों को धारण करना, उसी आधार से रहना इसी को जीवन कहते हैं। और ये तब समझ आयेगा जब हम इसका अभ्यास करेंगे। और अभ्यास एक दिन का विषय नहीं है, रोज़ का विषय है। रोज़ हमको अपने जीवन में लाना होगा तब हम परमात्मा को स्वीकार हो जाएंगे।

\- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

मन की बातें

प्रश्न- एक प्रोग्राम में आपने बताया था कि योग के अभ्यास से कैंसर की बीमारी ठीक हुई थी वह भी केवल एक हफ्ते में, काफी अच्छा रिज़ल्ट था। मुझे भी है। मैं पिछले 4 महीने से ये अभ्यास कर रही हूं लेकिन वैसी प्रोग्रेस हमें नहीं मिल पाई है तो मन निराश रहता है। क्या करना चाहिए?

उत्तर- देखिए ये सबके कर्मों का खेल अलग-अलग है। मेडिकल साइंस तो इस बात को नहीं बताएगी किसी को कि कर्मों का भी खेल चल रहा है। वो तो वर्तमान का जो भी डायग्नोसिस है उसके आधार पर सब कुछ बताएंगे। तो आपको ये ऐसे करना चाहिए, कम से कम दो घण्टे इस बीमारी से मुक्त होने के लिए रोज़ योग अभ्यास करना चाहिए। दो संकल्प लेकर- मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और इस देह की मालिक हूँ, स्वराज्य अधिकारी हूँ। दो घण्टे बहुत अच्छा योग करेंगे और देख लें अपने को कि कोई निगेटिव संकल्प तो नहीं चलते? माताओं के संकल्प चलते कि मैं मर गई तो मेरे बच्चों का क्या होगा? मैं मर ना जाऊं, डर बहुत रहता है क्योंकि कैंसर से दुनिया का बुरा हाल होता जा रहा है। लेकिन हमारे अनुभवों में ये बहुत बातें आई हैं कि बहुतों के ठीक हो गए, लंबा समय वो जियेंगे, ये भी निश्चितता उनको मिल गई है। तो पानी चार्ज करके पीना, योगाभ्यास करना, जहाँ कैंसर हो वहाँ एनर्जी देना और रात को सोते समय ये 5-7 बार ये संकल्प करना है कि मेरा कैंसर बिल्कुल ठीक हो गया। एक है कि मैंने आपको बताया तो आप रिपीट करेंगे तो इफेक्ट नहीं होगा। लेकिन आत्म विश्वास से आप रिपीट करेंगे अपने मन में कि मेरा कैंसर बिल्कुल ठीक हो जाएगा, हो गया है और बहुत खुश रहेंगे। निगेटिव और निराश नहीं। ये ठीक होगा इस विश्वास के साथ करें।

प्रश्न- सुबह मेडिटेशन करने के बाद सारे दिन का शेड्यूल हमारा कैसा होना चाहिए? इस पर मार्गदर्शन करें।

उत्तर- ये बहुत अच्छा प्रश्न है। हम सुबह तो मेडिटेशन करते ही हैं और अवश्य करना चाहिए। लेकिन सारे दिन के लिए भी कुछ अभ्यास हमें तय कर लेने चाहिए अपने मन में। ये हम आज सारा दिन ये अभ्यास करेंगे। चाहे आप एक, दो या तीन ही अभ्यास ले जाएं। चाहे आप कई अभ्यास साथ में ले जाएं कि इस कर्म में हम ये करेंगे, ऑफिस में ये करेंगे, दुकान में ये करेंगे। तो सारा दिन अच्छा अभ्यास भी हो और हल्के बहुत रहें। कुछ बाबा ने ऐसी चीज़ें सिखाई हैं जिनको हमें सारे दिन की दिनचर्या में साथ रखना चाहिए। जैसे बापदादा का आह्वान, ये याद रखना कि वो मेरे लिए ज़िम्मेदार है, वो मेरा साथी है या वो करन-करावनहार है... ऐसी एक-दो बातें याद रखना। तो मदद मिलती रहेगी, मन बहुत हल्का रहेगा। लक्ष्य ये हो कि हमें अपने कार्यों को, जो भी हम सारा दिन करते हैं उसको हमें एन्जॉय करना है और लाइफ को बहुत सरल बनाना है। तो ये कुछ अभ्यास भी सारा दिन करेंगे। बहुत अच्छा होगा अगर आप कर सकें दिन में तीन बार, ईश्वरीय महावाक्य देख लिया करें कुछ दो मिनट में। नोट करके रखें अपने पास। पॉकिट में भी रख सकते हैं, पर्स में भी रख सकते हैं। दो-तीन बार पढ़ लें। उससे क्या होगा कि फिर से जागृति आएगी और जो व्यर्थ कहीं भी चल रहा हो वो समाप्त हो जाएगा।

अपने समय के अनुसार जितना मुरली पढ़ना हो, योग करना हो कर सकते हैं। मुरली- ईश्वरीय खज़ानों की खान है, रत्नों की खान है। आँखें खुलती हैं मनुष्य की, जीवन जीने की राह मिलती है इससे, मन के बोझ समाप्त होते हैं, विचारों में महानता आती है, चित्त की शुद्धि होती है। ये तो अनमोल चीज़ें हैं। इन्हें तो जितना करेंगे उतना ही अच्छा होगा। लेकिन शाम का मेडिटेशन बहुतों का अनुभव है कि सवेरे से भी ज़्यादा पॉवरफुल होता है। और सोने से पहले आधा घण्टा अवश्य करना चाहिए। जो हम दूसरी चीज़ सिखाते हैं। हमारे ही पांच स्वरूपों का अभ्यास और मेडिटेशन भी जितना करेंगे, प्रभु मिलन करते हुए विश्रामी होंगे तो नींद सतोप्रधान होगी और सवेरे का समय बहुत एनर्जेटिक, सुखदाई और आनन्दकारी बितेगा।

प्रश्न- मैं रोज़ आपका समाधान प्रोग्राम देखती हूँ, राजयोग करने पर मेरी कोई भी प्रॉब्लम ठीक नहीं हुई अभी तक। तो इसके लिए क्या करें?

उत्तर- राजयोग के साथ कुछ और चीज़ें भी करनी चाहिए। राजयोग को हम विघ्न विनाशक भट्ठी कहते हैं, वो कराते हैं। कोई सफलतामूर्त, भिन्न-भिन्न संकल्पों से करते हैं लेकिन इसमें देखने की बात ये होगी कि ये इन्हें खुद चेक करना है कि योगाभ्यास में मन एकाग्र कितना होता है। कई लोग सोचते हैं ध्यान में बैठे हैं, लाल लाइट में योग हो रहा है, ये नहीं। शिवबाबा से कनेक्ट कितने होते हैं, व्यर्थ से मुक्त कितने ज़्यादा रहते हैं। अब मान लो कोई बीमार है, तो वो सोचे योग से ही ठीक हो जाएगा, ये गलत है। मेडिसिन भी उसको लेनी चाहिए, ट्रीटमेंट भी उसे लेनी चाहिए, मन को हल्का भी रखना चाहिए, अपने को प्रसन्न भी रखना चाहिए। अब बहुत सारी बातें एक साथ काउंट होती हैं। वो तो इनको बताना होगा कि कहाँ कमी रहती है लेकिन अगर बहुत अच्छा एकाग्रता के साथ योगाभ्यास किया जाए, तो हम तो सब देख रहे हैं कि बहुतों का ठीक हो रहा है। लेकिन जिनका नहीं हो रहा है वहाँ ये भी हो सकता है कि मनुष्य की जो कर्मों की गति है, उसका जो चिन्तन रहा है पूरा जीवन, अभी उसका चिन्तन निगेटिव है क्या, वो बहुत चिन्ताओं में रहते हैं, उनके घर में लड़ाई-झगड़ा है, पति की ओर से सदा इनसल्ट की गई है, इन चीज़ों का बुरा इफेक्ट सब-कॉन्शियस माइंड में समा जाता है। वो फिर बैड एनर्जी मनुष्य को ठीक होने नहीं देती है। तो एक साथ बहुत सारे परिवर्तन करने पड़ेंगे। दवाइयों के साथ, योगाभ्यास के साथ चिन्तन का परिवर्तन।

Contact e-mail - bksuryak@yahoo.com

हे! प्रिय वत्सों - अब दिव्यता का आह्वान करो

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई,माउंट आबू

याद करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जाएंगी...भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जाएगा... कोई विजयी रत्न बन जाएंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा सर्व रसों से स्वयं को भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खज़ानों से भर जाएंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जाएंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया...!!!

इन कोमल कलियों का बलिदान देखकर किसका मन प्रेरणा व उत्साह से नहीं भरेगा। जो फूल अभी खिले भी नहीं है, जिनमें अभी सुगन्ध भरनी बाकी है, वे चले है इस विरान में पुष्प उगाने, वे चले हैं इस दुर्गन्ध भरी वसुन्धरा पर पवित्रता की सरिता बहाने... क्यों न गौरव होगा, उनके जन्म देने वालों को भी और क्यों न गर्व होगा उसको भी, जिनका इशारा मिलते ही इन्होंने ये बलिदानी कदम उठाया। ये कलियां महकते पुष्प बन जाएं, ये कलियां विश्व की प्रेरक बन जाएं, ये कलियां निर्बलों व निर्धनों का सहारा बन जाएं... इनको बस ऐसी ही शुभ-भावनाओं की आवश्यकता है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में हज़ारों आत्माएं अपने जीवन रूपी पुष्प को शिव पर अर्पित कर चुकी है। ये महान विभूतियां कलियुग में रहते हुए भी कलियुग से बहुत दूर निकल आई हैं और पुनः लौटने का किसी का कोई भी इरादा नहीं है। तो क्यों न इस जीवन को दिव्यता से भर दें ताकि संसार हममें ही प्रभु का दर्शन कर सके। तो हमें अन्तर्मुखी होकर देखना है कि ये ईश्वरीय मौजों का काल कैसे बीत रहा है। कहीं ये अनमोल घड़ियां यूं ही तो नहीं बीत रहीं... कहीं ये वरदानी समय संघर्षों में ही तो नहीं बीत रहा... कहीं ये अविनाशी कमाई की घड़ियां हमारे हाथ से खाली ही तो नहीं जा रहीं... ऐसा तो नहीं कि कहीं हमें एहसास भी न हो और ये सुनहरा काल यूं ही बीत जाए।

मनुष्य की सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है

मनुष्य को सबसे प्यारी वस्तु ये जीवन है, जबकि इसे हो सेवाओं के लिए स्वाहा कर दिया, फिर भला इस जीवन को दिव्य बनाने के लिए हम एक बार दिल से मेहनत क्यों न करें! जबकि भगवान ने हमारा सभी बोझ भी हर लिया, हमें अपनी छत्रछाया में ले लिया, अपने प्यार में समा लिया और अपना उत्तराधिकारी बना लिया तो देरी किस बात की! तो आओ हम सभी मिलकर संकल्प करें कि जब तक अपने लक्ष्य को नहीं पा लेंगे, तब तक तपस्वी जीवन व्यतीत करेंगे, वैभवों से दूर रहेंगे और मुड़कर कभी भी पीछे नहीं देखेंगे। जीवन का बलिदान करने वालों, ज़रा याद करो उस अतीत को जब तुमने अपनी इस अमूल्य निधि-'जीवन' को ईश्वर को बलिदान करने का संकल्प किया था। क्या-क्या उमंगें थीं तुम्हारे दिल में? क्या कुछ करने के साहस के साथ कदम आगे बढ़ाए थे? जीवन के किस लक्ष्य को पाने के लिए निःसंकोच होकर और विघ्नों को लात मारकर वह कुर्बानी की थी?

अपने साहस और आत्म विश्वास को भूलो नहीं

अपने साहस और आत्म विश्वासों को भूलो नहीं। तुम्हारा ये साहस तुम्हारा सहायक बनेगा। समस्याएं और विघ्न तुम्हारे साहस व आत्मविश्वास को समाप्त न करें। जहाँ साहस व आत्मविश्वास है, वहाँ कठिनाई व समस्याएं स्वतः ही आत्म समर्पण कर देती है। याद करो उस समय को जब ये घड़ियां बीत जाएंगी... भगवान का नूतन युग रचने का कार्य सम्पन्न हो जाएगा... कोई विजयी रत्न बन जाएंगे और कोई अष्ट रत्न... कोई आत्मा सर्व रसों से स्वयं को भर लेंगे, किसी की तिजोरियां सब खज़ानों से भर जाएंगी तो कोई हाथ मलते ही रह जाएंगे कि ओह... हमने भाग्य निर्माण के इस काल में क्या-क्या किया। हम तेरे-मेरे की माला में ही उलझे रहे... हमने मान-शान के पीछे ही जीवन लगा दिया... हम न सुख दे सके, न सुख ले सके। परन्तु तब समय बीत चुका होगा और हम तब अपने को उन मनुष्यों से अच्छा नहीं समझेंगे जिन्होंने इस धरा पर आये हुए प्रभु को नहीं पहचाना।

तो हे जग को सुगन्धित करने वाले चेतन पुष्पों, बाबा की कामनाओं को पूर्ण करो... सबके प्रेरक बन जाओ... जो लोग तुममें विश्वास नहीं करते, उन्हें भी अपने दिव्य विवेक का चमत्कार दिखाओ। जो तुम्हें रूखी दृष्टि देते है, उन्हें तुम सुख भरी दृष्टि के महत्व का आभास कराओ। जो तुम्हें कमज़ोर समझते है, जो तुममें संशय करते है, उन्हें तुम सफलता की चैतन्य प्रतिमा बनकर दिखाओ। तुम अपने कदम इतनी तेज़ी से आगे बढ़ाओ कि वर्षों से चलने वाले यात्री पीछे रह जायें और उन्हें भी तीव्रगति से बढ़ने का उमंग प्राप्त हो।

योगयुक्त होकर विचार करें-

योगयुक्त होकर विचार करो कि जिस पर तुमने स्वयं को बलिदान किया है, उसने प्रत्यक्ष रूप में तुम्हें क्या दिया है? उसने अपनी असीम शक्तियों को तुमसे जोड़ दिया है... उसने तुम्हें अपनी शीतल छाया में विश्राम दिया है, तुम्हें अपने नयनों का नूर बना लिया है... तुम पर उसकी नज़र है और तुम्हें मालूम है कि वह तुमसे क्या चाहता है?

उसकी तुमसे श्रेष्ठ कामना है कि-

- ये मेरे चेतन चिराग जग को रोशन करें।
- ये मेरे नयनों के नूर जग के नूर बनें।
- मेरे ये पावन वत्स इस धरा पर उसी तरह चमकें जैसे नभ में सूर्य और चंद्रमा चमकते हैं।
- मेरी इन बलिदानी भुजाओं में तेज हो, दिव्यता हो, प्रकाश हो ताकि मेरे भक्त मेरी छवि इस धरा पर देख सकें।
- मेरे ये लाल, रूहों के सहारे बनें, मानव की डगमगाती कश्ती के किनारे बनें। मेरे ये वत्स विश्व की अमूल्य निधि बनें।
- मेरे ये वत्स जग की शोभा बनें, रोतों के लिए मुस्कान बनें, चिंताओं के लिए चिंगारी बनें, अबलाओं की शक्ति बनें और इस वीरान विश्व में हरियाली लायें।
- मेरे ये वत्स अति शक्तिशाली, अचल-अडोल बनें, विघ्नों को ललकारने वाले बनें और माया के साम्राज्य को समाप्त कर दें।

कंधार-महा.। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में पुलिस अधीक्षक अविनाश कुमार,नांदेड़ को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय प्रसाद व सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ज्योति।

इंदौर-ओमशान्ति भवन(म.प्र.)। रोटरी क्लब इंदौर के 80 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित समाज की विभिन्न विभूतियों के लिए आयोजित सम्मान समारोह में आध्यात्मिक और योग क्षेत्र में विशेष योगदान देने पर ब्र.कु. अनुभी,ओमशान्ति भवन,इंदौर को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करते हुए प्रेसिडेंट राकेश बनोरिया।

बड़ोदरा-अटलादरा(गुज.)। ब्रह्माकुमारीज़ अटलादरा और लायंस क्लब के संयुक्त तत्वावधान में सेवाकेन्द्र पर आयोजित फ्री मेडिकल कैंप 2025-26 के उद्घाटन पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र मुख्यसंचालिका ब्र.कु. पूनम, पी.एम.सी.सी. चेयरमैन परिमल पटेल, कैबिनेट सेक्रेटरी एल.एन. जयश्री शुक्ला, जी.एस.टी. एल.एन. शैलेश शाह, प्रेसिडेंट एल.एन. वर्षा कक्का, एल.एन. वैशाली शुक्ल, डॉ. मति शास्त्री, रानू जोशी तथा अन्य।

अव्यक्त मुरली 31-12-2002 (पहेली-24)2024 -25

ऊपर से नीचे

1. ..... का अर्थ ही है जैसे ब्रह्मा बाप ने जो कहा वह किया है, जो सोचा वह तुरंत दान महापुण्य समान किया।(4)
2. बापदादा यही चाहते हैं कि जहाँ से आदि हुई, वहाँ ही प्रत्यक्षता होनी है। ..... आता है ना! ब्रह्मा बाप के देश के वासी हो तो देश वासियों से प्यार होता है।(3)
3. अगर ..... सफल करेंगे तो भविष्य में भी आधाकल्प का पूरा ..... राज्य अधिकारी बनेंगे।(3)
4. जैसे ब्रह्मा बाप ने जो कहा वह किया है, जो सोचा वह तुरंत दान महापुण्य समान किया। ऐसे ही महावीर ग्रुप का यह ..... है ना!(2)
5. बापदादा ने देखा है, कोई-कोई स्थान में हिम्मत कम दिलाने की ..... है। हिम्मत दिलाओ, हर कार्य में मन्सा में भी, वाचा में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, कर्म में भी हिम्मत दिलाओ।(2)
8. जो भी आये चाहे सम्बन्ध में आये, चाहे सम्पर्क में आये लेकिन उनको कोई न कोई गुण या शक्ति की ..... दे देना।(2)
10. चारों ओर के बहुत मीठे, बहुत प्यारे बच्चों को पदम-पदम गुणा न्यू ईयर की मुबारक हो। यह जो घड़ी बीत गई, यह है ..... और बधाई की घड़ी।(3)
11. ..... के खजाने को भी सफल करो तो ..... का अर्थ है समझ, वहां इतने समझदार बन जायेंगे जो कोई मंत्रियों की ज़रूरत नहीं है।(2)
13. ऐसा प्लैन बनाओ जो कोई ने नहीं किया हो, वर्ष तो बहुत बने हुए है ना! तो आपका वर्ष सबसे ..... ले लेवे।(5)
14. आपके सिर पर भी ताज होगा और आपका पूरा अधिकार होगा। तो क्या करेंगे? नम्बरवन या नम्बरवार, क्या बनेंगे?(2)
15. जैसे दादियों के लिए कहते हो एक हैं, ऐसे आप दीदियां, दादे सब एकमत। इसका स्लोगन है-अभी-अभी ..... बनो, अभी-अभी मालिक बनो।(3)
16. बापदादा सदा कहते हैं कि यह मातायें जिस भी सेन्टर पर होंगी ना वह सेन्टर सदा फलीभूत होगा। चाहे कमायें नहीं लेकिन दिल बड़ी होती है, ... बड़ी होती है।(3)
17. एक दिन आयेगा, बहुत जल्दी आयेगा जो सब कहेंगे कि हम सभी स्व-परिवर्तन करने वाले शक्ति, पाण्डव ..... हैं।(2)
18. पिता का पिता, पितामह।(2)
21. सब तिलकधारी बनकर आये है, जिन्होंने विशेष रिफ्रेशमेंट की है वह तिलक धारी खड़े रहो। अच्छी निशानी लगाई है। आत्मा ..... गई है ना?(3)
23. हवा, पवन, अनिल(2)

बायें से दायें

1. बापदादा कहते हैं मुख मीठा तो कराना ही है लेकिन अपना मीठा मुखड़ा भी दिखाना है। सिर्फ मुख मीठा नहीं, मुखड़ा भी मीठा। इतनी ..... जमा है ना! (4)
3. इतना ..... कर रहे हो तो 21 जन्म ही स्वस्थ रहेंगे। चलते-चलते किसकी हार्ट रूक जाती, किसकी नाड़ियां बन्द हो जाती, वह नहीं होगी।(3)
6. बापदादा कहते है कि हर एक बच्चा अपने-अपने ..... से मुबारक और दिल की दुआयें स्वीकार करें।(2)
7. यह ..... को ड्रिल जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सफल योगी बनेंगे।(2)
9. सूरज, दिवाकर, भास्कर(2)
12. आपके पास गुणों का खजाना कितना बड़ा है, शक्तियों का दान करने वाले मास्टर ..... बनो(2)
13. अभी इस वर्ष ..... क्या करेंगे? अभी बापदादा ने जो काम दिया है, वह किया नहीं है।(4)
16. परमात्म मिलन की मौज सारे कल्प में संगमयुग पर मिलती है। हर दिन उत्सव है क्योंकि उमंग-उत्साह है कि अपने सर्व ..... बहिनों को परमात्मा पिता का बनायें।(2)
17. बापदादा सदा कहते है कि यह मातायें जिस भी ..... पर होंगी ना वह ..... सदा फलीभूत होगा।(3)
19. बापदादा तो ..... करते रहते है ना! तो मुश्किल योगी कौन-कौन बनता है! सहज योगी का यह मतलब नहीं है कि अलबेलेपन का पुरुषार्थ हो। श्रेष्ठ भी हो और सहज भी हो।(2)
20. ..... गाना तो सभी को आता है, बाप के गुणों का गीत गाना भी आता है और खुशी में ..... भी आता है।
22. सफलता का अधिकार आप ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए और किसका अधिकार हो सकता है! क्योंकि बाप ने आपको सफलता भव का ..... दिया है।(4)
24. ऐसे प्लैन बनाओ जो सांप मरे और लाठी भी नहीं टूटे। प्रत्यक्षता हो, धमाल नहीं हो, ... हो।(3)
25. वास्तव में ..... का एक-एक संकल्प, एक-एक सेकण्ड सफल करना ही सफलता मूर्त बनना है।(5)

23/24- पहेली का उत्तर (अव्यक्त मुरली 15-12-2002)

ऊपर से नीचे: 1.लवलीन, 2.वचन, 3.सेकण्ड, 4.मोहब्बत, 5.रात, 9.नेचर, 10.भावना, 11.भगवान, 13.परमात्मा, 14.वारिस, 16.मधुबन, 19.माइक, 21.साथ। **बायें से दायें:** 1.लगाव, 3.सेवा, 6.चमक, 7.मेहनत, 8.नशे, 10.भारत, 12.योग, 13.परिवार, 15.नाम, 17.दिन, 18.समान, 20.बच्चे, 22.कुम्भकरण, 23.अथक।

देहरादून-उत्तराखंड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात कर उनके शुभ जन्मदिवस की बधाई देते हुए ब्रह्माकुमारीज़ सबज़ोन इंचार्ज राजयोगिनी ब्र.कु. मन्जू दीदी,देहरादून, ब्र.कु. मीना, ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. प्रियंका तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

यहाँ न तो कोई हॉस्पिटल, न ही कोई ओपीडी

अनुभव

फिर भी होती हार्ट की सर्जरी...

भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा वीरता के लिए पदक से सम्मानित 61 वर्षीय उ.प्र. पुलिस में सेवारत प्रेमवीर राणा की सोच थी कि उन्हें कोई भी बीमारी नहीं होगी।

वीरता पदक से सम्मानित प्रेमवीर राणा,उ.प्र.

मैं सोचता था कि कोई बीमारी नहीं आएगी, अगर मैं सत्य पथ पर काम करता रहा तो, ये मेरा दृढ़ विश्वास था। हालांकि मुझे पुलिस में काम करते-करते दो बार गोली लगी। एक तो साम्प्रदायिक दंगे में रामपुर मनिहारान,उत्तरप्रदेश में गोली लगी। जिसके कारण 11 महीने बेड पर रहा। दूसरी बार 1992 में आतंकवादियों ने गोली मारी जिससे 17 महीने सवाई माधोपुर,जयपुर के अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती रहा। मैं सोचता था कि मैं इतना ओपन हार्ट वाला आदमी हूँ तो शायद मेरा ओपन हार्ट कभी ना खुले। समय के कालचक्र में देखो क्या हुआ कि मैंने जो सोचा भी नहीं था वो ही हार्ट की बीमारी हो गई। मैंने अपने बच्चों, पत्नी और एक-दोस्त के अलावा ये बीमारी की बात किसी को भी नहीं बताई। यहाँ तक कि डिपार्टमेंट को भी नहीं बताया कि 22 मई 2024 को मैं हार्ट का पेशेन्ट हो गया।

मैंने अपने नज़दीकी डॉक्टर को बताया तो उन्होंने कहा कि तुम्हें हो ही नहीं सकती हार्ट की बीमारी। मैंने एम.आर.आई. करवाई, एंजियोग्राफी करवाई। ज्यादा टाइम नहीं हुआ ये कराते-कराते फिर मैंने पूछा कि मैं अपने दिल का आदमी खुद का हूँ, ओपन हार्ट नहीं कराना। लेकिन सभी ने कहा 'पापा करवा लो, स्टंट डलवा लो। एक एम.एम. वाले डॉक्टर हैं ग्रेटर कैलाश में। पता लगा कि वहाँ कराएंगे तो वहाँ दवाई से खुलवा देंगे। मैंने देखा कि उस अस्पताल में दुनिया भर के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, राष्ट्रपति सभी के फोटो वहाँ लगे हुए थे। एक साल तक इलाज करवाया और देखो, दुर्भाग्य मेरा यहाँ से कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ा हुआ हूँ, कई प्रोग्राम में आया, कुनाया गया पर मुझे विश्वास नहीं था। किसी ने बताया कि यहाँ संस्थान में कैड का प्रोग्राम होता है। हमने सोचा ऐसे ही होगा खाना खिलाएंगे और कहेंगे अच्छा करो, बुरा न करो, ये सब चीज़ें बताएंगे। एक बार डॉ. सतीश गुप्ता से मेरे भाई सुशील मिलने आये। उन्होंने मेरी सितम्बर 2024 में डॉ. सतीश गुप्ता से बात भी करवाई, फिर भी विश्वास नहीं हुआ।

अभी इसी साल 11 मई 2025 को ही सावन के पहले दिन में ही मेरे को हार्ट अटैक आ गया और चोट भी लगी। फिर सबने मेरी पत्नी, बच्चे और सभी मित्र-सम्बन्धियों ने कहा कि तुम्हें मरना तो है ही अगर तुम स्टंट नहीं डलवाओगे। तब मेरे दिमाग में आया कि क्यों न एक बार डॉक्टर को दिखा लूं और ओपन हार्ट नहीं कराना। तब घर से शान्तिवन में आयोजित कैड प्रोग्राम के लिए दिनांक 13 को चला और 14 को पहुंच गया। आने में दो घण्टा देरी हो गया। और आते ही यहाँ पूछा कि डॉ. साहब ओपीडी में कब मिलेंगे। उत्तर मिला कैड के क्लास में मिलेंगे। मैंने पूछा ओपीडी में किस समय बैठते हैं? परंतु आश्चर्य की बात यह देखी कि यहाँ तो ना कोई अस्पताल और ना कोई ओ.पी.डी.। पर ज़्यादा क्या बताऊं यहाँ आते ही इस आध्यात्मिक हॉस्पिटल को देखा। आध्यात्मिक और साइंस का ये बेहतर सुंदर संगम है जो मैंने यहाँ देखा।

चमत्कार है डॉ. सतीश गुप्ता का और उनके चलाए गए इस कैड प्रोग्राम का। ऐसा हॉस्पिटल जो आध्यात्मिक है और डॉ. सतीश गुप्ता का जिन्होंने अपनी आत्मा पर अधिकार कर लिया हो और परमात्मा शिव से सीधा जुड़ गये हों। यहाँ का पूरा ही सिस्टम जोकि कैड प्रोग्राम में आये हुए हार्ट पेशेन्ट को प्रशिक्षित करते हैं। इस कैड प्रोग्राम में मैं भी जुड़ गया। मैं अपने को बहुत धन्य अनुभव कर रहा हूँ! मैंने ये कैड प्रोग्राम पूरा अटेंड किया और मैं बिल्कुल ही अपने आप को तरोताज़ा महसूस कर रहा हूँ। मेरी धमनियों में जो रुकावटें थीं जिससे मुझे चलने-फिरने में तकलीफ होती थी वो नॉर्मल हो गई। फिर से मैंने डॉक्टर से जाँच करवाई तो सब रिपोर्ट नॉर्मल आई। यहाँ शरीर और आत्मा के बीच का जो रिश्ता और सूक्ष्म संवेदनाएं कैसे काम करती है उसके बारे में सही-सही और साइंटिफिक तरीकों से बताया गया। साथ ही पथ्ययुक्त भोजन तथा दिनचर्या में अपनी सकारात्मक सोच के बारे में गहराई से जाना व समझा। मैं ओपन हार्ट का हूँ परन्तु हार्ट कैसे काम करता है उसकी क्या रिक्वायरमेंट है, कैसे नरिशमेंट होता है ये मैंने जाना। अब मैं अपने आपको स्वस्थ समझ रहा हूँ। यहाँ के सभी भाई-बहनों को मैं अपने दिल की गहराई से धन्यवाद करता हूँ।

मानव के शरीर का ऐसा ऑर्गन जो जन्म से मृत्यु तक बिना रुके, बिना थके जीवन देता है। लेकिन हमने कभी भी हृदय के बारे में नहीं सोचा कि उसकी ज़रूरतें क्या हैं, उसकी धड़कनें कैसे चलती हैं! हम तो भागदौड़ वाली ज़िन्दगी में उसकी सही रूप से देखभाल भी नहीं कर पाते, न ही उसके बारे में सोचते कि आखिर प्रभु प्रदत्त बेशकीमती उपहार को हम यूं ही उसका महत्व न समझ गंवा बैठते हैं।

रायपुर-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर जिला प्रशासन एवं समाज कल्याण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में कृषि मण्डपम में हरित योग कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए छत्तीसगढ़ के माननीय राज्यपाल रमेन डेका। मंचासीन हैं सुनील सोनी,विधायक, नवीन अग्रवाल,जिला पंचायत अध्यक्ष, अमिताभ जैन,मुख्य सचिव एवं आई.पी.एस. अरुण देव गौतम,पुलिस महानिदेशक। कार्यक्रम में उपस्थित रहे संभागायुक्त महादेव कावरे, कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह, निगम आयुक्त विश्वदीप तथा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. गिरीश चन्देल।

विदिशा-म.प्र.। विदिशा के रविन्द्र नाथ टैगोर सांस्कृतिक भवन में आयोजित 'नशे से दूरी है ज़रूरी' कार्यक्रम के पश्चात् नशा मुक्त भारत अभियान, सामाजिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मालती को मोमेंटो एवं सर्टिफिकेट भेंट कर सम्मानित करते हुए भोपाल संभाग के महानिरीक्षक आई.जी. अभय सिंह, विधायक मुकेश टंडन एवं श्रीमती गीता कैलाश रघुवंशी,जिला पंचायत अध्यक्ष। साथ हैं जिलाधिकारी अंशुल गुप्ता, पुलिस अधीक्षक रोहित काशवानी एवं अपर जिलाधिकारी अनिल डामोर। मौके पर उपस्थित रहे वन मंडल अधिकारी हेमंत यादव, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. प्रशांत चौबे, नगरपालिका अध्यक्ष प्रीति राकेश शर्मा एवं सीएसपी अतुल सिंह।

मुंबई-विले पार्ले(महा.)। मुंबई के नोवोटेल होटल में व्हीकनेक्टस्टार ईवेंट्स द्वारा आयोजित अवॉर्ड समारोह में भारत के प्राचीन राजयोग के प्रचार-प्रसार के लिए 183 वर्ल्ड रिकॉर्ड्स करने वाले ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशिक्षक डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके को इंटरनेशनल ग्लोरी अवॉर्ड 2025 से सम्मानित करते हुए प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री तमन्ना भाटिया। साथ हैं ब्र.कु. क्रीना बहन,विले पार्ले, ब्र.कु. विकास तथा अन्य।

ग्वालियर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर जिला प्रशासन, नगर निगम एवं योग आयोग द्वारा ऐतिहासिक ग्वालियर दुर्ग पर स्थित राजा मानसिंह महल परिसर के पास ज़िला स्तरीय सामूहिक योगा अभ्यास करते हुए ब्र.कु. प्रहलाद तथा अन्य भाई बहनें। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे मंत्री नारायण सिंह कुशवाह,म.प्र., सांसद भारत सिंह कुशवाह,ग्वालियर, कलेक्टर रुचिका सिंह चौहान,ग्वालियर, पुलिस अधीक्षक धर्मवीर यादव, नगर निगम कमिश्नर संघ प्रिय, जिला पंचायत अध्यक्ष दुर्गेश कुंवर सिंह, उपाध्यक्ष प्रियंका सिंह, सीईओ विवेक कुमार, सूचना आयुक्त उमाशंकर पचौरी, योग प्रभारी दिनेश चाकणकर तथा अन्य।

नवसारी-गुज.। गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. भानु बहन को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में शीतल सोनी,भाजपा प्रदेश मंत्री, तन्वी पंचाल,महिला मोर्चा प्रमुख, सीमा पटेल,महिला मोर्चा महामंत्री एवं नीतू शाह,कॉर्पोरेटर,महिला मोर्चा कार्यकर्ता।

केशोद-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर विश्व युवा कौशल दिवस पर आयोजित 'इंटरनेट टू इनरनेट' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. रूपा बहन, ब्र.कु. अल्पा बहन, रोटरी क्लब के प्रमुख डॉ. निखिल राणा साहेब तथा अन्य शहर के गणमान्य अतिथिगण व ब्रह्माकुमारी बहनें।

गोराई-बोरीवली मुंबई(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पारुलबेन, ब्र.कु. सुरेश मोदी, योगा टीचर संजीवनी भोसले तथा अग्निशमन दल कर्मचारीगण।

भाटापारा-छ.ग.। राष्ट्रीय डॉक्टर दिवस पर आयोजित डॉक्टर्स को पटका पहनाकर व मोमेंटो भेंट कर सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, डॉ. राजेश अवस्थी,मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी,बलौदा बाज़ार, डॉ. आर.के. सोनी, डॉ. श्रीकांत शुक्ला,नेत्ररोग विशेषज्ञ, डॉ. वासुदेव ठाकुर,शिशुरोग विशेषज्ञ, डॉ. मुकेश निहलानी,ऑर्थोपेडिक सर्जन, डॉ. विकास आडवाने, डॉ. बाजपेयी, डॉ. सीमा गुप्ता, डॉ. मिश्रा, डॉ. बी.बी. गुप्ता, डॉ. आर.एन. तिवारी तथा अन्य डॉक्टर्स।

आज ज़िम्मेदारी लेने की कोई बात ही नहीं कर रहा

राजयोगी ब्र.कु. जगदीश चंद्र हसीजा

हम कोई ऐसी ज़िम्मेदारी लेने की बात नहीं कर रहे हैं जिसमें कुछ पैसा खर्च होता हो, कुछ समय लगाना पड़ता हो, शरीर से कुछ अधिक काम करने की ज़रूरत हो या हमारी पहले की ज़िम्मेदारियों में कोई ऐसी ज़िम्मेदारी जुड़ जाए कि हम इस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठाने में असमर्थ हों। ज़िम्मेदारी तो हरेक व्यक्ति लेता है और मनुष्य ने कई व्यर्थ ज़िम्मेदारियाँ भी ले रखी हैं। हम तो ऐसी ज़िम्मेदारी बता रहे हैं जिससे हमें झंझटों से छुटकारा मिल जाए, मन को राहत महसूस हो और शरीर में भी हल्कापन आ जाए।

पुरूषार्थ क्या है? पुरूषार्थ यह है कि हर कोई स्वयं अपनी ज़िम्मेदारी ले-ले। दूसरे की ज़िम्मेदारी लेना तो कठिन होता है परन्तु अपनी ज़िम्मेदारी तो ली ही जा सकती है क्योंकि इसका लाभ हमें ही होने वाला है। अगर हम अपनी ज़िम्मेदारी लेने में भी स्वयं को असमर्थ अनुभव करते हैं तो सामर्थ्य भी हमें मिल सकती है।

अगर और कुछ नहीं कर सकते तो हम ज़िम्मेदारी लेने का इरादा तो करें। हम कोई ऐसी ज़िम्मेदारी लेने की बात नहीं कर रहे हैं जिसमें कुछ पैसा खर्च होता हो, कुछ समय लगाना पड़ता हो, शरीर से कुछ अधिक काम करने की ज़रूरत हो या हमारी पहले की ज़िम्मेदारियों में कोई ऐसी ज़िम्मेदारी जुड़ जाए कि हम इस ज़िम्मेदारी के बोझ को उठाने में असमर्थ हों। ज़िम्मेदारी तो हरेक व्यक्ति लेता है और मनुष्य ने कई व्यर्थ ज़िम्मेदारियाँ भी ले रखी हैं। हम तो ऐसी ज़िम्मेदारी बता रहे हैं जिससे हमें झंझटों से छुटकारा मिल जाए, मन को राहत महसूस हो और शरीर में भी हल्कापन आ जाए।

ज़िम्मेदारी केवल यह है कि हम स्वयं को विधायक समझें

वह ज़िम्मेदारी यह है कि हममें से हरेक स्वयं को विधायक समझें, अर्थात् हरेक व्यक्ति अपनी बुद्धि में इस विचार को दृढ़ रख कर कर्म करे कि उसका कर्म ऐसा श्रेष्ठ हो कि वह नियम, मर्यादा या कानून के समान हो। तब हरेक व्यक्ति स्वयं को विधायक समझेगा और विधि-पूर्वक तथा नियम-पूर्वक कार्य करेगा।

हम कोई ऐसा विधायक बनने के लिए नहीं कह रहे हैं जिसके लिए चुनाव लड़ने की ज़रूरत हो और जो विधान सभा भंग होने पर छूट जाए। यह तो पोस्टरबाज़ी, नारेबाज़ी, भाषणबाज़ी आदि के चक्कर में पड़ने के बिना ही विधायक बनने की बात है। विधान सभा वाले कई विधायक तो स्वयं भी कानून तोड़ देते हैं परन्तु हम तो जीवन को ऐसा विधिपूर्वक बनाने की बात कह रहे हैं कि आपका हर कर्म लोगों के सामने पालनीय अथवा अनुकरणीय विधान या आदर्श हो। यहाँ तो इस ज़िम्मेदारी को लेने की बात हो रही है कि हम चारित्रिक नियमों, आध्यात्मिक नियमों का सदा पालन करेंगे और हमारा जीवन ही विधान की खुली किताब होगा। जिसका जीवन और कार्य-व्यवहार विधि और विधान पूर्वक हो वही तो वास्तव में 'ज्ञानी' और 'योगी' है। 'ज्ञानी' कहते ही उसको हैं कि जो कर्मों और आचरण को दैवी गुणों से युक्त करना जानता हो और 'योगी' की परिभाषा ही यह है कि वह 'युक्ति-युक्त' रीति से हरेक कार्य करता हो।

विधाता का परिचय और उसकी स्मृति

परन्तु इस प्रकार विधि और विधान के अनुरूप कार्य करने और स्वयं को विधायक समझने के लिए ज़रूरी है कि हम 'विधाता' को जानें और कर्म करते समय उसका बताया हुआ विधान हमारी स्मृति में रहे। परमात्मा को 'विधाता' कहा ही इसलिए जाता है कि वह कर्मों का विधान बता कर और उसके अनुरूप जीवन बनाने की विधि समझा कर हमारे भाग्य का विधाता बनता है। तो परमात्मा को 'भाग्य-विधाता' तो कहते हैं परन्तु वे ये नहीं जानते कि परमात्मा विधि-विधान बता कर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाते हैं और उससे ही हमारा भाग्य बनता है।

हमें ये मालूम होना चाहिए कि परमात्मा अथवा विधाता के जो गुण हैं, वे ही श्रेष्ठ विधान की नींव हैं। परमात्मा के गुणों का वर्णन करते हुए प्रायः कहा जाता है कि वह पवित्रता, शान्ति, प्रेम, न्याय, सद्भावना, करुणा, सत्यता, दिव्यता और सद्गुणों का भंडार है। इन्हीं गुणों से वह नये समाज का निर्माण करता है। इन्हीं के द्वारा ही वह मनुष्य का भाग्य बनाता है। यही उसके विधान की बुनियाद है। यदि हम कर्म करते समय विधाता को सामने रखेंगे तो उसके ये गुण हमारी स्मृति में रहेंगे और इन द्वारा ही हम विधायक बन सकेंगे अर्थात् ऐसे कर्म कर सकेंगे जो विधि और विधान के अनुसार हों।

तिरुवनंतपुरम-केरल। राजभवन में केरल के माननीय राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर से स्नेहभरी मुलाकात करने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए डॉ. ब्र.कु. दीपक हरके। साथ हैं तिरुवनंतपुरम स्टेट सेंटर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मिनी दीदी।

अकोला-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा 'पत्रकारिता में बदलती तकनीक: अवसर, चुनौतियां और मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता' विषय पर आयोजित जिला स्तरीय मीडिया सम्मेलन में उपस्थित रहे ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगी ब्र.कु. डॉ. शांतनु, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रुक्मणि, महाराष्ट्र राज्य के मीडिया प्रभाग के समन्वयक डॉ. सोमनाथ वडनेरे, जलगांव, राष्ट्र भाषा सेवा समाज के संस्थापक डॉ. रामप्रकाश वर्मा, राजेश राजोरे, संपादक दैनिक देशोन्नति व बुलढाणा संस्करण, खामगांव, सूरज मोरे, आकाशवाणी प्रसारण अधिकारी, जागना साप्ताहिक के संपादक एवं प्रकाशक श्याम पन्नालाल शर्मा, डॉ. बाबासाहेब पत्रकारिता महाविद्यालय, अकोला के प्राध्यापक डॉ. हमेश बाबू नागलवार एवं डॉ. प्रमोद कुमार शुक्ल, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी।

माउंट आबू-पांडव भवन(राज.)। पांडव भवन के परिसर का अवलोकन करने के पश्चात् समूह चित्र में अजमेर सेशन कोर्ट के न्यायाधीश नीरज वर्मा व न्यायाधीश अंकिता वर्मा, संस्था की लीगल एडवाइजर ब्र.कु. श्रद्धा एवं ब्र.कु. शशिकांत।

अमरावती-रुक्मणी नगर(महा.)। महानगर पुलिस आयुक्त अरविंद चावरिया को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता। साथ हैं ब्र.कु. रूपाली, ब्र.कु. डॉ. उत्कास, ब्र.कु. प्रमोद, ब्र.कु. अमरनाथ तथा अन्य।

किल्ला पारडी-गुज.। आई.टी.आई. कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. वैष्णिका, ब्र.कु. सोनम, प्रधानाचार्या सुरेखा टंडन तथा अन्य शिक्षकगण एवं विद्यार्थीगण।

इंदौर-रानी बाग(म.प्र.)। ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् पत्रिका समूह के प्रधान संपादक डॉ. गुलाब कोठारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. भुवनेश्वरी। साथ हैं अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

नवसारी-गुज.। नवसारी नगर निगम एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में लुंसीकुई स्थित एनएमसी स्पोर्ट्स क्लब परिसर में आयोजित 'ध्यान शिविर' में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गीता बहन। मंचासीन हैं डिप्टी कमिश्नर जे.यू. वसावा साहब एवं ब्र.कु. अल्पना।

मालिया हाटीना-गुज.। रक्षाबंधन के अवसर पर मालिया हाटीना के तालुका प्रमुख दिलीप सिसोदिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रक्षा।

तिल्दा-छ.ग.। रक्षाबंधन के अवसर पर जनपद पंचायत तिल्दा के सीईओ कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रियंका।

सूचना

आप सभी पाठकों से मिलकर, बात करके बहुत अच्छा लगता है अपने लेखों के माध्यम से, अपनी पत्रिका के माध्यम से। लेकिन समय प्रति समय बदलाव ज़रूरी है और उस बदलाव को स्वीकार करना भी ज़रूरी है। तो एक छोटा-सा बदलाव हम पाठकों के सामने लेकर आ रहे हैं। जो हमारी, आपकी अपनी पत्रिका ओमशान्ति मीडिया का जो पाक्षिक आगमन होता था आप सबके पास, अब उसको मासिक किया जा रहा है। कई सारे पाठकों का ये मत था कि महीने में दो बार थोड़ा ज़्यादा हो जाता है। तो उसको एक में समेटकर मासिक करने का निर्णय लिया गया। और इसमें वो सारी चीज़ें उपलब्ध हैं जो पहले भी थीं। और कुछ उसमें अनुभव, कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें और कुछ नये आयाम जीवन के जोड़कर इस पत्रिका को और अच्छा बनाया गया है।

तो आप सभी से हमें आपके अपने कमेंट तो चाहिए साथ ही इसमें और-और क्या हम नया परिवर्तन करें जो सभी को अच्छा लगे, वो सुझाव भी चाहिए। लेकिन आप सबका प्यार, आप सबकी इसके प्रति इतनी भावना देखकर आज भी हमको इसको बनाने का मन करता है। तो इस नये बदलाव सोलह पेज के साथ इस नयी पत्रिका को आप सभी स्वीकार करें। अब से अगस्त मास से ये पत्रिका मासिक होने जा रही है। इन्हीं सारी बातों के साथ, इन्हीं सारी शुभकामनाओं के साथ इस नये बदलाव का स्वागत करें।

राजनांदगांव-खैरागढ़(छ.ग.)। छत्तीसगढ़ के माननीय राज्यपाल रमेन डेका से ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. चन्द्रकली। साथ हैं अन्य अतिथिगण।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संस्कार वाटिका में 'एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग' की थीम पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शैलजा दीदी, चौरसिया समाज अध्यक्ष बृजेश चौरसिया, समाजसेवी प्रकाश चंद्र जैन, एस.के. उपाध्याय, एडवोकेट संजय मिश्रा, योगा टीचर प्रियंका चौरसिया तथा अन्य।

बारडोली-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित बिजनेसमैन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. अरुणा, ब्र.कु. जयश्री, ब्र.कु. कनक, चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रमुख प्रदीप जी, वर्दे मातरम विद्यालय के ट्रस्टी घनश्याम जी एवं मिलिंद जी।

सातारा-वाकातवाडी(महा.)। रक्षाबंधन के अवसर पर सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शोभा, सरपंच श्रीमती अश्विनी दलवी, पूर्व सरपंच चन्द्रकांत सनस, सेवानिवृत्त उपाभियंता जिला परिषद शिवाजी महादेव चव्हाण तथा अन्य।

वडोदरा-गुज.। रक्षाबंधन पर्व पर नवीन ट्रेनिंग ऐकेडमी में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मीनल, ब्र.कु. सोनम, ब्र.कु. दिशा, मर्चेन्ट नेवी ऑफिसर कुमार, नेवी इंजीनियर यशवंत सिंह तथा अन्य।

धमतरी-छ.ग.। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आकाश गंगा कॉलोनी के गार्डन में आयोजित कार्यक्रम में विभिन्न योगासनों का अभ्यास करते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें। मंचासीन हैं ब्र.कु. सरिता, डॉ. आशीष नायक,अध्यक्ष आकाश गंगा कॉलोनी, मनजीत सिंह बिंद्रा,बिल्डर, योगा टीचर मेनका व भावना,योग विकास केन्द्र।

भोपाल-गुलमोहर कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के ब्लेसिंग हाउस के ज्ञान मोती सभागार में गुरु पूर्णिमा के पर्व पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना तथा अन्य बहनें-माताएं।

मानसिक उन्नति क्या है

हम सभी का जीवन हमेशा दो पहलुओं से ओत-प्रोत है। एक तो किसी का आना और दूसरा है किसी का जाना। आने और जाने का सिलसिला निरन्तर चलता है। जब कोई जुड़ता है तो मानसिक शांति हमको ऐसा लगता है कि मिलती है। लेकिन चले जाने के बाद उदासी आती है ऐसा हमको लगता है। आप इन दोनों बातों को बड़े ध्यान से देखेंगे, सोचेंगे तो आपको एक बात समझ में आएगी कि जब ये दोनों चीज़ें हो रही हैं इसके पहले मैं क्या था? पहले का मतलब है जब ये घटना घट रही थी तो उसके पहले हमारी मानसिक अवस्था क्या थी? तो हम पाएंगे कि शुरू में जब कोई नहीं जुड़ा था तो भी हम अकेलापन महसूस कर रहे थे। लेकिन जब कोई जुड़के चला गया तो भी हम अकेलापन महसूस कर रहे हैं।

तो इसका मतलब जो हमारी असली अवस्था है वो एकान्त और अकेलापन है ना! क्योंकि दोनों में कॉमन है- जुड़ा तो, नहीं जुड़ा,चला गया तो। दोनों स्थितियों में हम सभी बिल्कुल सिंगल हैं, अकेले हैं। अब आप देखो इस दुनिया में बीच-बीच में इन सब बातों से हमारा उमंग-उत्साह घट जाता है, प्रेम घट जाता है, भाव घट जाते हैं। क्योंकि इस मानसिक अवस्था को स्वीकार करने के लिए हम राज़ी नहीं हैं। हमें लगता है कि नहीं ये जीवन नहीं हो सकता, कोई तो चाहिए। किसी के साथ तो जीवन निर्वाह करना पड़ेगा,ऐसे थोड़े ही रह सकते हैं!

ऐसे ही दूसरी स्थिति में जब कोई चला जाये तो कहते हैं हमेशा तो कोई साथ होता नहीं। तो हम सब उसी अधूरेपन को दूर करने के लिए अलग-अलग हथकंडे अपनाते हैं। कभी हम किसी चीज़ के साथ जुड़ते हैं, कभी वस्तु, कभी यूट्यूब, कभी फेसबुक कभी जो भी है सिर्फ ये जताने के लिए कि मेरे साथ कोई है, मेरे एकान्त अकेलेपन को कोई दूर कर रहा है। लेकिन ये सही नहीं है कि जो अवस्था बार-बार आ रही है आपके जीवन में, आप दरअसल वही तो हैं। इसलिए मानसिक अवस्था, मानसिक उन्नति का जो सबसे बड़ा आधार है वो ये है कि इस बात को समझ जाना कि जीवन हमारा शुरू से अकेला ही रहा है। लेकिन अकेलापन को, प्यार से जीवन को स्वीकार करना इसकी ताकत हमारे अन्दर बहुत कम है।

परमात्मा निराकार शिव बाबा, शिव पिता हम सबको आकर ये बात रोज़ समझाते हैं कि तुम आत्माएं अकेले आये थे, अकेले जाना है। लेकिन वो बात सहजता से समझ इसलिए नहीं आती क्योंकि हम सबसे पहले ये बात स्वीकार करने को राज़ी नहीं कि सच में हम अकेले ही हैं जीवन में। हमारे आस-पास लोग जुड़ते ज़रूर हैं लेकिन जायेंगे ज़रूर। तो मानसिक उन्नति वहीं से शुरू हो जाएगी जब हम सबसे पहले उस बात को स्वीकार कर लेंगे, मान लेंगे, अपने अन्दर ढाल लेंगे कि हमारे जीवन में सबसे ज़्यादा ज़रूरी है इस बात को मानना कि अकेलापन हमारा कोई दुर्भाग्य नहीं है, हमारा कोई अधूरापन नहीं है। बल्कि ये हमारा सौभाग्य है, हमको ये बात समझ में आ रही है कि किसी के होने या न होने से मैं आत्मा भरपूर नहीं हूँ, ऐसा नहीं होता, मैं आत्मा हूँ ही भरपूर। अकेले थे, अकेले हूँ, अकेले जाना है। इस अवस्था को स्वीकार करने से जीवन में हमारे हर पल, हर क्षण उन्नति होती रहेगी। और हमको लगेगा कि हम कुछ कर रहे हैं, मानसिक रूप से, शारीरिक रूप से, शाब्दिक रूप से, सामाजिक रूप से। क्योंकि अवस्था अगर एक दिन में बदल जाती है तो बहुत कुछ बदल जाता है ना।

इसलिए इस बात को समझ के इसको जीवन में उपयोग करना ही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। इसलिए मानसिक अवस्था को समझना, अकेलेपन को समझना, एकान्त को समझना मानसिक उन्नति ही है।

बैतूल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्यविधाता भवन में आयोजित 'डिवाइन यूथ फोरम रिट्रीट' का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. सुनीता,सारणी, ब्र.कु. शीतल,पुणे, ब्र.कु. पंचशीला,सीहोर, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. कृति,अहमदाबाद, ब्र.कु. रेखा,साँची, ब्र.कु. सुनीता,होशंगाबाद, ब्र.कु. प्रह्लाद,ग्वालियर, ब्र.कु. नंदकिशोर, डॉ. कृष्णा मौसिक, डॉ. जयदीप पोपली तथा अन्य।

भुज-कच्छ(गुज.)। बी.एस.एफ. के सीनियर कमांडेंट ऑफिसर विपिन पंवारी के साथ ज्ञान चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय स्लोगन भेंट करते हुए ब्र.कु. रक्षा बहन।

ठाणे-शिवाजी नगर(महा.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयकर विभाग के कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए आयकर अधिकारी सुनील। मंचासीन हैं डॉ. ब्र.कु. सरला तथा अन्य।

इंदौर-ज्ञान शिखर(म.प्र.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर चमेली देवी योग केन्द्र, बालाजी सेवार्थ विनोद अग्रवाल फाउंडेशन द्वारा इस वर्ष की थीम 'एक पृथ्वी, एक हेल्थ' पर शहर के मध्य विशाल इन्दौर स्टेडियम अभय प्रशाल में आयोजित कार्यक्रम में सभी प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए प्रेरक वक्ता ब्र.कु. श्रेया,मुंबई। कार्यक्रम में इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, शीर्षस्थ उद्योगपति एवं समाजसेवी विनोद अग्रवाल, प्रेमचंद गोयल, श्रीमति चंद्रिका अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल, योग टेंपल के प्रसिद्ध योगी मनोज गर्ग, काजल मेहता, सांसद शंकर लालवानी,इंदौर, विधायक महेन्द्र हार्डिया, पार्षद नन्द किशोर पहाड़िया, समाजसेवी किशोर गोयल, योग साधक बहन गिरनोवा विक्टोरिया एवं नोर्डदीकोवा,रूस तथा अन्य गणमान्य अतिथियों आदि की उपस्थिति रही।

सिहोरा-म.प्र.। रक्षाबंधन के अवसर पर कारागार में आयोजित कार्यक्रम में सभी कैदी भाइयों व सर्व अधिकारी कर्मचारियों को राखसूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कृष्णा, निर्मला चौबे, जेलर दीलीप नायक, आर.एस.एस. के देव शुक्ला तथा अन्य।

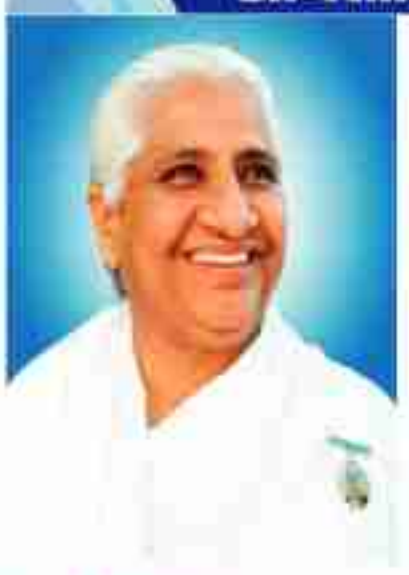

दादी प्रकाशमणि जी की 18वीं पुण्यतिथि

25 अगस्त विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की18वीं पुण्यतिथि देशभर में विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाई गई। मुख्यालय शान्तिवन में देशभर से पहुंचे पांच हज़ार से अधिक लोगों ने दादी को श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी शिक्षाओं को जीवन में अपनाने का संकल्प लिया। दादी की स्मृति में बने 'प्रकाश स्तंभ' को विशेष रूप से सजाया गया था। जहाँ सुबह 8 :15 बजे सबसे पहले मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी, जगतगुरू जिवर स्वामी करपात्री महाराज,अयोध्या एवं वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दादी को श्रद्धांजली अर्पित की। बता दें कि 25 अगस्त 2007 को दादी प्रकाशमणि जी यह नश्वर देह त्याग कर अव्यक्त हो गई थीं। इसमें मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि दादी ने सभी के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। उनके हमेशा शब्द होते थे कि मैं तो निमित्त मात्र हूं। शिवबाबा ही यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय को चला रहे हैं। दादी ने जीवनभर प्रेम, एकता और भाईचारे का संदेश दिया। दादी हमेशा कहती थीं कि प्रेम और एकता में वह शक्ति है जो बड़े से बड़े कार्य आसान हो जाते हैं। दादी का प्रेम ही था कि लोग सरहदों की दीवारों को भुलाकर एकता के सूत्र में बंधते गए। आपकी शिक्षाएं, योगी-तपस्वी जीवन, विश्व बंधुत्व की सोच आज भी लाखों लोगों का मार्गदर्शन करती है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि दादी का कहना और मेरा करना। मैंने कभी भी दादी को किसी सेवा के लिए ना नहीं कहा।

हमें एक-एक रुपये को सफल करना है

संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी ने कहा कि दादी सदा सेवाओं में दिन-रात व्यस्त रहती थीं और भाई-बहनों को भी व्यस्त रखती थीं। दादी कहती थीं कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आया एक-एक रुपया दान का है। इसलिए हमें एक-एक रुपये को सफल करना है। अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. करुणा ने कहा कि दादी के सानिध्य में वर्षों तक सेवाएं करने का सौभाग्य मिला। दादी में नम्रता का गुण अद्वितीय था। वह छोटे-बड़े सभी का बहुत ही सम्मान करती थीं।

दादी एक-एक बात को बड़े ही प्यार से सिखाती थीं-

अतिरिक्त महासचिव डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि दादी के साथ मिलकर अनेक सेवाएं कीं। दादी एक-एक बात को बड़े ही प्यार से सिखाती थीं। वह यहाँ आने वाले मेहमानों का बहुत ध्यान रखती थीं। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. सूरज ने कहा कि दादी की प्यार भरी पालना, अपनापन का कमाल है कि दादी को देखकर हज़ारों कन्याएं, बेटियां ब्रह्माकुमारी बनती गईं। संचालन प्रयागराज की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने किया। ब्र.कु. डॉ. दामिनी एवं मधुरवाणी ग्रुप के ब्र.कु. सतीश व सहयोगी कलाकारों ने गीत प्रस्तुत किया।

ये भी रहे मौजूद- मौके पर अयोध्या के सेवानिवृत्त आई.पी.एस. केनी सिंह, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. शशि दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शारदा दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. लीला दीदी, पंजाब ज़ोन निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. प्रेम दीदी, अतिरिक्त महासचिव डॉ. प्रताप मिड्ढा, मीडिया विंग उपाध्यक्ष ब्र.कु. आत्मप्रकाश, डॉ. सतीश गुप्ता सहित लोग उपस्थित रहे।

भारत में ही दिखता पारिवारिक सम्बन्धों का सुंदर दृश्य: डॉ. वीरेन्द्र सिंह

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के सचिव अमित यादव ने बताया कि इस अभियान की शुरुआत ब्रह्माकुमारीज संस्था एवं भारत सरकार के साथ हुए मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग(एम.ओ.यू.) के तहत हुई।

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। पारिवारिक सम्बन्धों का जो दृश्य भारत में देखने को मिलता है, वो अन्य किसी भी देश में नहीं है। उक्त विचार केन्द्रीय मंत्री डॉ. वीरेन्द्र सिंह,सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय,भारत सरकार ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के समाजसेवा प्रभाग द्वारा ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर में 'संगम-गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सामाजिक जीवन अभियान' के शुभारम्भ के अवसर पर दादी प्रकाशमणि सभागार में आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान का भारत सरकार के साथ ये मात्र एक एमओयू नहीं बल्कि सामाजिक मूल्यों एवं संस्कारों की पहचान कराता है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान एक विश्वव्यापी आध्यात्मिक संगठन है। जो इस प्रकार के अभियान को लोगों के बीच बेहतर ढंग से पहुंचा सकता है। ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि दुनिया में केवल मात-पिता ही ऐसे हैं जो बच्चों

की खुशी में खुश होते हैं। उन्हें चाहिए तो सिर्फ बच्चों का स्नेह और समय। उन्होंने सभी से प्रतिज्ञा कराई कि कोई भी अपने बुजुर्गों को वृद्धावस्था आश्रम नहीं भेजेंगे। संस्थान द्वारा अभियान के लिए एक गीत की लॉन्चिंग हुई। जिसे ब्र.कु. चांद ने स्वर प्रदान किए। कार्यक्रम में संस्थान के समाज सेवा प्रभाग अध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. प्रेम सिंह, ग्लोबल हॉस्पिटल माउंट आबू के वैज्ञानिक डॉ. रश्मिकांत आचार्य ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. उर्मिल एवं ब्र.कु. सुनैना ने किया।

दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर इंटरनेशनल हाफ मैराथन में दौड़े 2700 धावक

मनमोहिनी वन-आबू रोड(राज.)। 7वीं प्रकाशमणि दादी आबू इंटरनेशनल हाफ मैराथन में रविवार को 7 देशों के 2700 धावकों ने आबू रोड से माउंट आबू के लिए 21.9 किलोमीटर की दौड़ लगाई। मैराथन के नियत समय साढ़े तीन घंटे

की अवधि में दो हज़ार धावक फिनिशिंग प्वाइंट तक पहुंचे। वहीं 700 धावक आधी दौड़ ही पूरी कर पाए। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि 25 अगस्त, विश्व बंधुत्व दिवस के उपलक्ष्य में इस मैराथन का आयोजन किया गया था। मैराथन को सुबह 6 बजे मनमोहिनी वन परिसर के गेट नंबर दो से जालोर-सिरोही सांसद लम्बुराम चौधरी, पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया, रेवदर विधायक मोतीराम कोली और ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा व राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय ने शिव ध्वजा दिखाकर रवाना किया।

हर 500 मीटर पर तैनात रहे सुरक्षाकर्मी–

मैराथन को लेकर आबू रोड और माउंट आबू पुलिस बल ने पूरी मुस्तैदी के साथ सुरक्षा का जिम्मा संभाल रखा था। जिला प्रशासन के अधिकारी भी पूरे समय अलर्ट मोड पर रहे। लगभग हर 500 मीटर पर सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की गई थी। साथ ही रिफ्रेशमेंट प्वाइंट पर भी पुलिसकर्मी मौजूद रहे। छीपाबेरी से सुरक्षा का जिम्मा सी.आर.पी.एफ. के जवानों ने संभाल लिया था। यहाँ से माउंट आबू तक सी.आर.पी.एफ. के 28 जवान रनिंग प्वाइंट पर तैनात रहे।

कई देशों से भाग लेने पहुंचे धावक–

मैराथन में सबसे खास बात 18 वर्ष के युवाओं से लेकर 72 वर्ष के बुजुर्गों ने भाग लिया। इसमें भारत के सभी राज्यों सहित खासतौर से साउथ अफ्रीका, ब्रिटेन, केनिया, दुबई, इथोपिया के रनर्स ने भाग लिया। कुछ धावक प्रोफेशनल्स थे तो कुछ शौकिया तौर पर स्वस्थ रहने के लिए दौड़ते हैं। इसमें लड़कियों और महिलाओं ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कुछ रनर्स ने शनिवार को ही आबू रोड से माउंट आबू तक दौड़ लगाकर अभ्यास किया, ताकि मुख्य दौड़ में कम समय में पहुंचकर विजेता बन सकें। ओमशान्ति भवन,माउंट आबू में दौड़ पूरी होने के बाद समापन समारोह आयोजित किया गया। जहाँ विजेताओं को पुरस्कार राशि, मेडल और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शुभारम्भ पर इन्होंने रखे अपने विचार–

- जालोर-सिरोही सांसद लुम्बाराम चौधरी ने कहा कि विश्व बंधुत्व का संदेश लेकर आयोजित की गई यह हाफ मैराथन ब्रह्माकुमारीज का सराहनीय कदम है।
- पिंडवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि गर्व की बात है हमारे आबू रोड में हर साल होने वाली हाफ मैराथन में देश-विदेश से धावक भाग लेने पहुंचते हैं।
- रेवदर विधायक मोतीराम कोली ने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए योग, प्राणायाम और दौड़ जरूरी है।
- एशियन मैराथन चैंपियन सुनीता गोदरा ने कहा कि दौड़ के लिए उमंग-उत्साह के साथ जुनून होना जरूरी है। बिना जुनून के दौड़ में जीतना सम्भव नहीं है। जो लक्ष्य बनाएं उसे पाने के लिए जी-जान लगा दें। इस मौके पर आबू रोड तहसीलदार पन्नालाल चौधरी, सदर थाना सर्किल इंस्पेक्टर दर्शन सिंह, ब्र.कु. जगदीश, ब्र.कु. देव सहित अन्य ब्रह्माकुमारीज भाई-बहनों की उपस्थिति रही। संचालन ब्र.कु. चंदा ने किया। मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने सभी युवाओं को नशामुक्ति का संकल्प कराया।

विजेताओं को दिए गए पुरस्कार राशि के चेक–

को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. सचिन ने बताया कि मैराथन में प्रथम स्थान पर आने वाले विजेता को पुरस्कार के रूप में 71 हज़ार रुपये, द्वितीय विजेता को 61 हज़ार रुपये और तृतीय स्थान पर आने वाले विजेता को 51 हज़ार रुपये की राशि चेक द्वारा पुरस्कार के रूप में दी गई। इसके अलावा निर्धारित समय में दौड़ पूरी करने वाले और सभी धावकों को मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मैराथन में ये रहे विजेता–

प्रथम स्थान पर जोधपुर के 24 वर्षीय युवक देवाराम रहे, जिन्होंने 1 घंटा 19 मिनट 40 सेकंड में दौड़ पूरी की। वहीं द्वितीय स्थान पर गुजरात के अनिल वणवासिया रहे जिन्होंने 1 घंटा 21 मिनट 44 सेकंड में दौड़ पूरी की। तीसरे स्थान पर जैसलमेर के मुकेश कुमार रहे जो 1 घंटा 22 मिनट 17 सेकंड में फिनिशिंग प्वाइंट पर पहुंचे। चौथे स्थान पर पवन तमाड़िया और पांचवें स्थान पर सुनील कुमार कसोलिया रहे।

भारत वह देवभूमि, जहाँ देवी-देवताओं का राज था

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय में पहुंचे देशभर से राजा-महाराजाओं के वंशज

आबू रोड-शान्तिवन(राज.)। संस्थान के मनमोहिनी वन स्थित ग्लोबल ऑडिटोरियम में आयोजित दो दिवसीय रॉयल फैमिली स्प्रिचुअल रिट्रीट का शुभारम्भ दीप प्रज्वलित कर किया गया। जिसमें देशभर से राजा-महाराजा घराने के वंशज और रॉयल फैमिली के सदस्यों ने भाग लिया। स्वागत सत्र में रॉयल हैरिटेज, रॉयल फ्यूचर वीडियो प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया गया। इसमें स्वर्णिम युग की झलक दिखाई गई। सभी राजाओं-महाराजाओं का शाही अंदाज में स्वागत किया गया।

उद्घाटन सत्र में ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मोहिनी दीदी ने कहा कि यह जीवन अमूल्य है। इसे सेवा और परमात्मा की याद में सफल करना है। अपनी वास्तविक पहचान को जानना है कि हम सभी आत्माएं हैं और यह जीवन महान कार्यों, दिव्य कार्यों के लिए मिला है। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि जल्द ही भारत स्वर्णिम भारत बनने वाला है क्योंकि भारत ही वह देवभूमि है जहाँ देवी-देवता राज करते थे। अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी ने कहा कि परमात्मा के घर में आप सभी राजा-महाराजाओं का स्वागत है। यह भगवान का घर, आपका घर है। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज संस्थान का मुख्य उद्देश्य है स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन। अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि देशभर के राजघराने के परिवार के सदस्यों को यहाँ देखकर बहुत खुशी हो रही है। आप सभी यहाँ आते रहें। डॉ. प्रताप मिड्ढा ने भी सम्बोधित किया।

शाही परिवार के राजा-महाराजा बोले

○ महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री व डोंडाइचा के शाही परिवार के जयकुमार रावल ने कहा कि हमारा राजपरिवार और ब्रह्माकुमारीज समाज कल्याण, मानव कल्याण के कार्य में लगी हुई है।

○ उदयपुर के महाराजा विश्वराज सिंह बहादुर ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज परिवार और हमारे राजघराने का पुराना रिश्ता रहा है। संस्थान का उद्देश्य आध्यात्मिक जागरण और प्रगति है। लोग अध्यात्म से जुड़ें, यही समय की मांग है। यदि अध्यात्म और वैज्ञानिकता एक हो जाए तो दुनिया को बहुत फायदा होगा। मौके पर महारानी महिमा कुमारी भी मौजूद रहीं।

○ सरगुजा-अंबिकापुर,छत्तीसगढ़ के महाराज व छत्तीसगढ़ के पूर्व उपमुख्यमंत्री त्रिभुवनेश्वर शरण सिंह देव ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज परिवार से मैं हृदय से जुड़ा हूं। संस्थान, लोगों में नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिकता की शिक्षा देने के लिए सराहनीय कार्य कर रहा है। मौके पर युवराज आदित्येश्वर शरण सिंह देव भी मौजूद रहे।

○ रामपुर,उत्तरप्रदेश के नवाब सैय्यद मोहम्मद काज़िम अली खान बहादुर ने कहा कि मुझे यहाँ आने का अवसर मिला मैं बहुत खुश हूं।

○ हैदराबाद के आसफ जाही राजवंश के निज़ाम नवाब रौनक यार खान ने कहा कि हैदराबाद में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रमों में जाने का मौका मिला। संस्थान, सामाजिक बदलाव के लिए अच्छा कार्य कर रही है।

○ महारानी मधुराधी सिंह के साथ आये बूंदी के महाराव राजा वंशवर्धन सिंह ने कहा कि मुझे यहाँ आकर आंतरिक शान्ति की अनुभूति होती है।

○ किशनगढ़,राजस्थान की महारानी मीनाक्षी देवी ने कहा कि माउंट आबू अध्यात्म की भूमि है। यहाँ आकर बहुत खुशी हो रही है।

○ सिरोही,राजस्थान के शाही परिवार के महाराजा देवव्रत सिंह बहादुर ने कहा कि महाभारत के इतिहास में वशिष्ठ आश्रम का बड़ा महत्व है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान बहुत ही सराहनीय सेवा कर रही है। मौके पर युवराज ईशेश्वर सिंह भी मौजूद रहे।

○ राजपिपला,गुजरात के युवराज मानवेन्द्र सिंह गोहिल ने कहा कि मैंने यू.एस. में ब्रह्माकुमारीज का पीस विलेज सेंटर देखा है। वहाँ जाने से अद्भुत शान्ति की अनुभूति होती है। संस्थान 'विश्व एक परिवार है' का दिव्य संदेश पूरे विश्व में दे रहा है।

इन राजघरानों के राजा-महाराजा भी रहे मौजूद- राजस्थान के मारवाड़ राजघराने के महाराजा गज सिंह,जोधपुर, मारवाड़ राजघराने की महारानी हेमलता राजे, तेलंगाना के जाटप्रोले संस्थानम के राजा साहब आदित्य लक्ष्मण राव, भरतपुर,राजस्थान की महारानी दिव्या सिंह और युवराज अनिरुद्ध सिंह, भरतपुर हेरिटेज होटल व लक्ष्मी विलास पैलेस के निदेशक राव राजा रघुराज सिंह, ओडिशा की परलाखेमुंडी गंगा राजवंश की महारानी कल्याणी गजपति, सिरमौर,हिमाचल प्रदेश की रानी कुंजना सिंह, झालावाड़,राजस्थान के राजा राजेन्द्र सिंह राजावत और कुवरानी मरुधर कुंवर, ठिकाना बनिया राजावत, मध्यप्रदेश के दतिया के महाराज लोकेन्द्र अरुणादित्य सिंह जू देव बहादुर, गुजरात,दांता के महाराणा साहेब रिद्धिराज सिंह, छोटा उदेपुर,गुजरात के महाराजा जयप्रतापसिंह वी. चौहान और महारानी तनवीर चौहान, मध्यप्रदेश,ओरछा के राव राजा विश्वजीत सिंह जू देव और कुंवर पार्थ सिंह जू देव, गुजरात भिलड़ी आनंद के शाही परिवार गोहिल बलवीर सिंह, दिलीप सिंह एवं गोहिल कल्पनाबा बलवीर सिंह,कनेटी सानंद, गुजरात के शाही परिवार के जीतेन्द्र सिंह वाघेला और नयनाबा वाघेला, वाघवान के शाही परिवार के कुंवर सुधीर सिंह झाला और कुंवर रानी शक्तिदेवी झाला, गनोद-सौराष्ट्र गुजरात की कुंवर रानी हंसिनीदेवी डी. जाडेजा, जालिम-विलास परिवार जोधपुर की कुंवर रानी मीरा देवी, अभिजीत सिंह राठौड़, दसले पार्वती देवी और दसला वेंकट सत्यनारायण राजू, मोगल्टूरु के जमींदार मुख्य रूप से मौजूद रहे।

उत्कृष्टता के लिए आध्यात्मिकता ज़रूरी: रियर एडमिरल हारा

गुरुग्राम-ओआरसी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा ओमशान्ति रिट्रीट सेंटर में भारतीय नौसेना रक्षा नागरिकों के लिए आयोजित तीन दिवसीय रिट्रीट में आध्यात्मिक सशक्तिकरण विषय पर भारतीय नौसेना के रियर एडमिरल आदित्य हारा ने कहा कि किसी भी कार्य में उत्कृष्टता के लिए आध्यात्मिकता जरूरी है। भारत विभिन्न संस्कृतियों का देश होते हुए भी आध्यात्मिक रूप से एक है। उन्होंने आगे कहा कि आध्यात्मिकता केवल व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं बल्कि देश की सुख-समृद्धि के लिए भी जरूरी है। ब्रह्माकुमारीज संस्थान आध्यात्मिक मूल्यों के आधार से विश्व में शान्ति एवं प्रेम का संचार कर रहा है। नौसेना रक्षा नागरिकों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि वे जो कुछ भी यहाँ सीखें उसे जीवन में जरूर अपनाएं। संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी ने कहा कि जीवन में असली खेल हमारे विचारों का है, शारीरिक स्वास्थ्य से भी जरूरी मानसिक स्वास्थ्य है। हमारा व्यक्तिगत जीवन जितना अच्छा होगा उतने ही अच्छे ढंग से हम देश व समाज की सेवा कर सकते हैं। बाहरी परिस्थितियों का सामना करने के लिए आंतरिक शक्ति जरूरी है। जो आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही सम्भव है। संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग की उपाध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी ने कहा कि आध्यात्मिक ज्ञान ही सच्चा मार्गदर्शक है। आध्यात्मिक सशक्तिकरण से ही मन स्वस्थ एवं खुशहाल रहता है। भारतीय नौसेना के कैप्टन शिव कुमार ने संस्थान के सुरक्षा सेवा प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन सेना के सेवानिवृत्त कर्नल बीसी सती ने किया। कार्यक्रम में 120 से भी अधिक भारतीय नौसेना रक्षा नागरिकों ने शिरकत की और रिट्रीट का लाभ लिया।

भारतीय नौसेना रक्षा नागरिकों के लिए तीन दिवसीय आध्यात्मिक सशक्तिकरण रिट्रीट का आयोजन

रक्तदान करना सर्वश्रेष्ठ पुनित कार्य है: सांसद शंकर लालवानी

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। दादी प्रकाशमणि जी भले आज शरीर रूप में हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी प्रेरणा हमारे साथ है। दादी ने आजीवन विश्व भर में समाज की सेवा की और आज उनके पुण्य स्मृति पर यह पुनीत कार्य किया जा रहा है, यह बहुत ही सराहनीय है। उक्त विचार सांसद शंकर लालवानी ने ब्रह्माकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 18वीं पुण्यतिथि पर ब्रह्माकुमारीज के समाज सेवा प्रभाग द्वारा न्यू पलासिया स्थित ज्ञानशिखर में आयोजित विशाल रक्तदान शिविर के उद्घाटन में रखे। इंदौर जोन की क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी ने बताया कि पूरे भारत और नेपाल में 22 से 25 अगस्त तक विशाल रक्तदान महाअभियान चलाया जा रहा है जिसमें 1 लाख यूनिट रक्त एकत्रित कर विश्व रिकॉर्ड बनाने का लक्ष्य रखा गया है। संपूर्ण डायग्नोस्टिक सेंटर की डायरेक्टर डॉ. साधना सोडाणी ने कहा कि अगर रक्त देने के काबिल हो तो जीते जी रक्तदान और मरने के बाद नेत्रदान अवश्य करें। एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज के ट्रांसफ्यूजन मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र वर्मा ने कहा कि रक्तदान करते रहना चाहिए। एम.जी.एम. मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अरविंद घनघोरिया, एम.वाय. हॉस्पिटल व सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. अशोक यादव, कस्टम विभाग के अपरायुक्त डॉ. दिनेश बिसेन, समाजसेवी गिरीश लुल्ला, एम.वाय. हॉस्पिटल के ब्लड बैंक के विभागाध्यक्ष डॉ. रानू ठाकुर, डॉ. नितिन अजमेरा आदि ने भी रक्तदान का महत्व बताते हुए अपनी शुभकामनाएं दी।

भ्रांतियों को खत्म कर हमें रक्तदान करना चाहिए

बिलासपुर छ.ग.। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रकाशमणि दादी की 18वीं पुण्यतिथि पर आयोजित रक्तदान एवं निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का शुभारम्भ सभी अतिथियों के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। एस.ई.सी.एल. के अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक हरीश दुहन ने कहा कि मैं सौभाग्यशाली हूं कि दादी की पालना का अनुभव आज भी महसूस होता है। उनका स्मृति दिवस- विश्व बंधुत्व दिवस पर आयोजित रक्तदान महाअभियान में सभी को बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए। विधायक सुशांत शुक्ला,बेलतरा ने कहा कि रक्तदान महाअभियान के द्वारा मानव शरीर के लिए रक्त बीज की व्यवस्था सबसे बड़ा सामाजिक सरोकार है। महापौर पूजा विधानी ने कहा कि रक्तदान के बारे में भ्रांतियों को खत्म कर हमें रक्तदान करना चाहिए। सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. मंजू ने कहा कि आत्मा और रक्त में कोई जाति, धर्म का भेद नहीं होता। उन्होंने आगे बताया कि शिविर में कुल 162 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

RNI NO. RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 23th TO 24th Each Month
स्वामी - आर.ई.आर.एफ. प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नाकीरेड्डी द्वारा मैग्निम ऑफसेट, L 101-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज शान्तिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, तलहटी, आबू रोड, शान्तिवन - (राज.) - 307510
See Latest News login
www.omshantimedia.org